वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा

भजन संग्रह (आठ पुस्तकें)

॥ मांगलिक कार्यक्रम ॥
मण्डप
06 मार्च 2014
दिन गुरुवार
प्रीतिभोज
07 मार्च 2014
दिन शुक्रवार
सायं 7 बजे से
वधू
आगमन
08 मार्च 2014
दिन शनिवार
प्रात: बेला
श्री रामदास उत्सव गार्डन
॥ कार्यस्थल ॥
शर्मा जी के पेट्रोल पम्प के सामने
ग्वालियर बाईपास तिराहा, इटावा
बारात हमारे निवास स्थान मेढ़ी बुध से बस द्वारा

* ओ३म् *

बारहमासी संग्रह

जिसमें भरत, ध्रुव व बेनीमाधो यह तीन
बारहमासी सम्मिलित हैं ।

प्रकाशक—
बैनीराम बुकसेलर
देवपुस्तकालय दरेशी नं० २ आगरा ।

❀ अथ ❀

भरत की बारहमासी

चैत पिछले पाख राम नौमी को जन्म लियो। अवधपुरी सुख धाम सखिन मिल मंगल चार कियो ॥ खबर जब दशरथ ने पाई। दिये दान गजराज गऊ दिन थोड़े की ब्याई ॥ सभा सब प्रफुलित है आई। कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखों चतुराई ॥

लागत ही बैसाख केकई बावरि करि डारी। भरत कहैं अरु जीवन हमरो मिली जो तुम सी महतारी ॥ दुख सब नगरी को दीयौ। तीन लोक के नाथ राम को बनोवास कीयौ ॥ कुमति लोग कैसी बनि आई, कर्म रेखना मिटे करो कोई लाखन०॥ २ ॥

जेष्ठ पंच मिल कही भरत को गादी बैठारौ। भरत भरत कान पर हाथ नाथ मोहि गरदन क्यों मारो॥ सरै नहिं इन बातन काजा ॥ तीन लोक के नाथ राम वे अयोध्या के राजा ॥ बात यह सबके मन भाई ॥ कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखों चतुराई ॥ ३ ॥

अषाढ़ आसो राम मिलन की लागि रही। राम कौन बन में बताव भरत जु बातें कही। नगर के नर

पर सब नारी ॥ रथ डोला गज बाजि भीर भई भरत संग त्यारी ॥ नदी जैसे सागर कूं धाई ॥ कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखों चतुराई ॥ ४ ॥

सावन भरत भीलपुर पहुंचे भीर भई भारी । भीलन कटक जोरि कर कीनी लड़िवे की त्यारी ॥ भरत सों पूछके रार करो । राम लषण सिया काज तीर गंगा के जूझि मरो ॥ खबर यह भरत ने पाई । कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखों चतुराई ॥ ५ ॥

भादों भरत भीलन को भक्त जान मन में । कन्दमूल फल फूल भरत की भेट करो वन में । मल्ल जब अगुआ करि लाये भरद्वाज के जाय प्राग में दर्शन जब पाये ॥ प्राग की दुनियां उठि धाई । कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखों चतुराई ॥ ६ ॥

कुंआर करी महमानी मुनिने पूछी कुशलाता । ढोउकर जोर दई परिक्रमा कौशिल्या माता ॥ हमारो जीवन सुफल भयौ । इतनी बात सुनि मुनिवर ने आशीर्वाद दयौ ॥ भरत की माता समझाई ॥ कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखन चतुराई ॥ ६ ॥

कातिक कूंच प्रयाग से कीना चित्र कोट आये । वलकल चीर जटा शिर सोहे राम लषण वन में पाये ॥ भरत उठाय राम उर लाये नैनन नीर भरे ॥ भरत जब चरनन जाय परे । भरत तुम भाई सुखदाई । कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखन चतुराई ॥ ८ ॥

अगहन बारहिं बार भरत को रघुवर समझावें। भरत लौटि घर जाउ राज तुम करो अजुध्या में॥ लोग सबही सुख पावेंगे। चौदह बरष बीत जायें तब हमहू आवेंगे॥ भरत को ऐसे समझाई॥ कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखन चतुराई॥ ९॥

पूस मास लिया राम लषण सग सुधि गई भीर घनी। जनक वशिष्ठ गुरु समझावें कहें अपनी अपनी। ये बिनती बहुत भांत कीनी। राम प्रताप आस चरनन में खड़ाऊं भरत को दीनी॥ उलट घर जाउ भरत भाई। कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखन चतुराई॥ १०॥

माह मनायो मान राम ने सुख पायो मनमें॥ जनक पुरी में जनक पहुंचाये भरत अयोध्या में॥ खड़ाऊं गादी धर दीनी। रामचन्द्र से कठिन तपस्या भरत ने कीनी बड़ाई याही में पाई। कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखन चतराई॥ ११॥

फागुन मास हरी जब सीता रावण बस कीयो। रावण मारि लंक पुर जारी राज विभीषण को दीयो॥ जीत के अवधपुरी आये। शिव सनकादि आदि ब्राह्मणादिक दर्शन को आये॥ राम को गादी ठहराई। कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखन चतुराई॥ १२॥

भरतकी यह बारह मासी। गावै सुने परम पद पावै मिटे जम की फांसी॥ वेद में ऐसे ही गाई। कर्म रेख ना मिटे करो कोई लाखन चतुराई॥ १३॥ इति॥

बारहमासी धुरू की

❁ अस्तुति ❁

॥ दोहा ॥

शिवशंकर के कमल पद बार बार शिर नाय।
विपता को स्वामी हरौ कीजै मेरी सहाय॥
ध्रुवचरित्र में की दोस्तो सुनौ कथा चितलाय।
बाबूराम के दयालू दो सब कष्ट मिटाय॥

॥ बाहरमासी ॥

टेक—ब्याह दूसरे की प्यारी मत शिक्षा तुम दीजै।
चैत महीना लगो नृपति को चिंता है भारी॥ होय न कोई पुत्र कह रही यों सुनीति नारी। ब्याह अब दूजौ करि लीजै॥ ब्याह०। सौति चून की बुरी नारि मति सादी करवाश्रौ। देख सौति दुख तुम्हें पिआरी प्यारी घबड़ाश्रौ॥ मती लाचार मुझे कीजै। ब्याह०॥

एक पुत्र के काजे मुसीबत सारी सहि लूंगी। करौ दूसरौ ब्याह प्राणपति ये शिक्षा दूंगी॥ किसी का टीका लैलीजै॥ ब्याह०॥

लागौ मास वैसाख भूप ने टीका लैलीयौ । ज्येष्ठ मास में ब्याह दूसरौ भूपति ने कीयौ ॥ हाल आगे का सुनि लीजै ॥ ब्याह० ॥

आकर के छोटी रानीने हठ भारी कीनी करो नियारी सौति को ये शिक्षा दीनी ॥ कहन प्यारी मेरी कीजै ॥ ब्याह० ॥

लीले कपड़े रंगा गजी के अब पहना दीजै । काग बिड़ारन महल की तुम स्वामी कीजै ॥ प्रेम इतना मो पर कीजै । ब्याह० ॥

जाय बिड़ारौ काग महल के क्यों सोचौ प्यारी । अपने आप कियौ दुख आपुको अब भुगतो प्यारी ॥ बांस जल्दलेलीजै । ब्याह० ॥

लगत मास आषाढ़ सुनैती घर से चल दीनी । टूटी फाटी एक झौंपड़ी गुजर वहां कीनी ॥ ध्यान अब आगे को दीजै ॥ ब्याह० ॥

एक दिना की बात भूप सुनैती के घर आये । रहे वहां सब रात सबेरे महलों का आये ॥ ईश की कुदरत सुन लीजै ॥ ब्याह ० ॥

श्रावण महीना लगौ सुनैती के ध्रुव जन्म लियौ । और एक पुत्र उत्तम कुमार हरि छोटी का दीयौ ॥ खुशी महलों में सुनि लीजै ब्याह ० ॥

टेक—खेलत २ ध्रुव एक दिन महलन गये आई ॥ देख ध्रुव को गोद नृपति ने अपनी बैठाये ॥ प्यार करैं भारी भूपति अति मन में हरसाये ॥ नारि छोटी तौलौं आई । खेलत० ॥

जहां बैठौ तू ध्रुव वहां बैठे उत्तम मेरा जल्दी उतरौ नहीं । गोद का करम तेरा फैकि दीनौ अति रिसखाई ॥ खेलत० ॥

भादौं महीना लगौ ध्रुव वन तपने को धाये ॥ जमुना जी

के तीर पास मथुरा जी के आये ॥ वहीं पर तपे धुरू जाई । खेलत० ॥

क्वार महीना लगौ मेघ अति हरि ने बरसाये । और कातिक में भूता प्रेतादिक डरपाने आये ॥ नहीं ध्रुव डरपे डरपाई । खेलत० ॥

अगहन महीना लगौ इन्द्र ने परी भेज दीनी ॥ खांडित तप करने ध्रुव का माया अति कीनी ॥ अप्सरा पीछे सरमाई । खेलत० ॥

पूस महीना लगौ रूप माता का धरि आई । रोकर ऐसे कहै परी उठि ध्रुव मैं अकुलाई ॥ माता मैं हूं सुनीति आई । खेलत० ॥

माघ महीना लगौ इन्द्र ने ओरे बरसाये । और अनेक रूप बनाय धुरू टीले पै डर पाये ॥ तौऊना सारी बिसारी । खेलत० ॥

फागुन महीना लगौ धुरू हरि के दरशन पाये ॥ और जाकर के अजुध्या में सब को हरि २ दिखलाये ॥ देखि मौसी अति सरमाई । खेलत० ॥

मात के जौरें गये खड़े जोरि दोऊ हाथ । दरस राम के कीजिये उठ के मेरी मात ॥

देखि धुरू को सामने फूली नहीं समात ॥ गोदी में बैठारि के दुख सुख की कही बात ।

॥ रसिया भरत का कष्ट ॥

तुम बंसी वारे आऔ २ भारत का कर बेड़ापार ।
ये भारत बड़ा दुखारी । इसकी लो खबर मुरारी ॥
नैया डूब रही मझधार ॥ तुम बंसी बारे० ॥
जिस ब्रज में गऊ चराई । तुम गोभी खोद खवाई ॥
अब उन पै चलै कटार ॥ तुम बंसी बारे० ॥
अब आप सामरे आओ । गऊ ओंके कष्ट मिटाओ ।
अब तो लेउ खबरि करतार ॥ तुम बंसी बारे० ॥
जन कहत पुकार मुरारी । लो अब के खबरि मुरारी ॥
कहते बाबूराम पुकार ॥ तुम बंसी बारे० ॥

बैनी माधो का बारहमासा

कार्तिक किलोल करैं सब सखियां राधा बिचार करै मनमैंरे । माधो पिया को आन मिलावो नाहीं तो प्राण तजें छिन मैंरे ॥ हमको छोड़ि चले बैनी माधो राधा सोच करे मन मैंरे ॥ अगहन गेंद बनाय सांवरे जाय खेलें तट यमुना केरे ॥ खेलत गेंद गिरे यमुना में काली नाग नाथ्यो छिन में रे ॥ हमको० ॥ २ ॥ पूस मास हमसे छल कीनों आप चले सैयां मधुवन को ॥ हमको० ॥ ३ ॥ माघ मास पिय जाड़ा लगत

है नींद न आवै मेरे नयन को ॥ नन्दलाल जनम के कपटी हमसों कपट किये मन में रे ॥ आव मेरे नयनन को ॥ हमको योगिन कीनी माधोजी घर २ अलख जगावन को ॥ हम० ॥ ४ ॥ फागुन रङ्ग बनाय सांवर जाय खेलें सङ्ग कुबिजा के ॥ फेंट गुलाल हाथ पिचकारी मारत हैं तकि २ घूंघट में ॥ हम० ॥ ५ ॥ चैत मास फूले बन टेसू ऊधो आये समझावनको सुवरन गले हाथ मृगछाला अङ्ग विभूति लगा बन को ॥ ॥ हम० ॥ ६ ॥ मास वैसाख वैस मेरी बारी आप न आये सैयां मधुवन में । ऋतुग्रीषम अरु विरह सतावै विरह की हूक लगी तन में ॥ हम० ॥ ७ ॥ ज्येष्ट में ज्वाला फूंके तन में रे ऊधो कहियो घर आवन को । एक तो अकेली दूजे विरह सतावत आय गई ऋतु बरषा की ॥ हम० ॥ ८ ॥ लागे अषाढ घुमड़ आये बादल बिजुली चमके मेरे आँगन में । चौंकि चौंकिचहुं ओर निहारों जैसे मीन फिरे जल में ॥ हम० ॥ ९ ॥ सावन स्वामी हमसे छल कीन्हें प्रीति किये सौतिन कुबिजा से । अहो नंदलाल प्राण कैसे राखूं नहीं आये श्याम बृन्द्रावन में ॥ हम० ॥ १० ॥ भादों भवन नींद नहिं आवे मोरवा बोलें मधुवन में । कोयल होय मैं बन २ हूहूं सूखे ताल बृन्द्रावन के ॥ हम० ॥ ११ ॥ बारहमासा निर्मल भये चन्दा गौरी सावै अपने आंगन में ॥ सूरदास तब आन मिले हरि सुखी भई राधा मन में ॥ हमको छोड चले बैनी माधो राधा शोच करे मन में रे ॥

॥ इति ॥

पं० लीलाधर द्वारा गनेश मशीन प्रिंटिंग प्रेस हाथरस में मुद्रित ।

बेला के गौनेकी मल्हार

लेखक—

पण्डित इन्द्रमन सूतैल सवाई ।

प्रकाशक—

देव पुस्तकालय, दरेशी नं० २ आगरा ।

दूसरा पता—

बैनीराम बु० माईथान आगरा ।

प्रथम बार] सर्वाधिकार स्वरक्षित [मूल्य)॥

आनन्द प्रेस, कसेरट बाजार आगरा ।

व्यौपारियों को शुभ सूचना।

हमारे यहां की कुछ प्रकाशित पुस्तकें।

बारहमासी संग्रह)॥, वेदों का डंका)।, भजन रामायण)॥, ईश्वर प्रार्थना)॥, वैदिक संध्या)॥ हवनमंत्र)॥, सुकन्या प्रार्थना)॥, जनकपुर की गारी ~), महादेव पार्वती के व्याह की गारी ~), फुदकती मैना ≈), भक्ती सागर ≈), मनुष्य कर्तव्य ~), अंग्रेजी शिक्षा ।), महिला सुधार भजनावली ≈), तेज प्रकाश भजनावली ≈)॥, ऐतिहासिक भजनावली ।), स्त्री गीत मंगलाचार ।≈), भर्तृ हरि शतक ।॥), विदुरनीति ।॥), चाणक्य नीति ।≈), वैद्य जीवन ।।), सरल व्यौपार ।), पाखण्ड खण्डनी ।), आर्य भजन कीर्तन ≈), सूर्य पुराण बड़ा ।।), भगवत मंगल ।), वेदान्त दर्शन दोनों भाग २), निहालदे की मल्हार)॥, मैना के गौने की मल्हार)॥, दुः बूढ़ी कपिला गाय)॥,

इसके अतिरिक्त हर स्थानों की छपी हुई पुस्तकें हमारे यहां से मंगाइये। व्यौपारियों को भरपूर कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता—

देव पुस्तकालय, दरेशी नं० २ आगरा।

दूसरा पता—

बेनीराम बु० माईथान, आगरा।

मुरली की तान
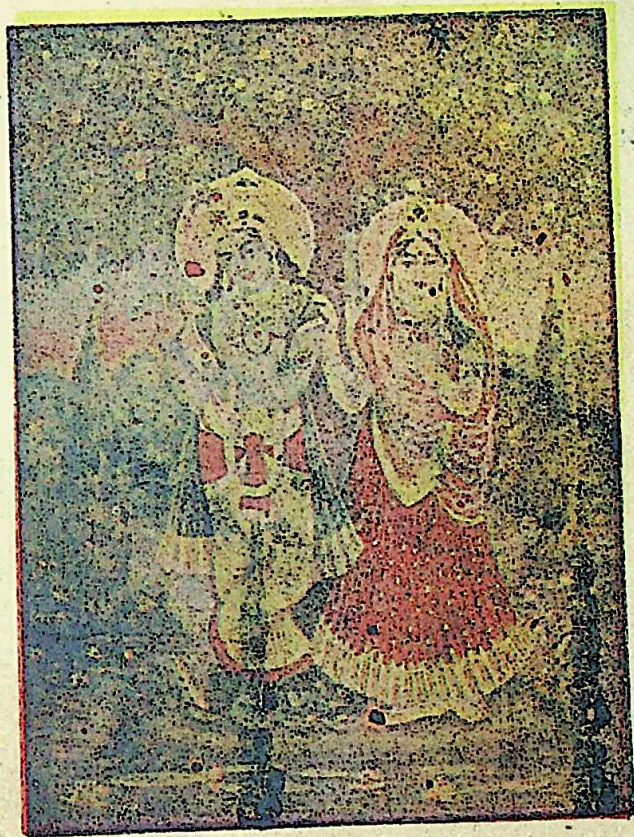
दीपकज्योति कार्यालय, हाथरस

कीमत =)॥

मुरली की तान

फिल्मी तर्जों पर

इस पुस्तक में फिल्म गोव, आन, बहार, चमन, आवारा, होलफ, परदेश, दिल्लगी, राग मशहूर गानों पर भजन दिये हैं।

[सर्वाधिकार स्वरक्षित]

प्रकाशक—

दीपक ज्योति कार्यालय हाथरस यू० पी० ।

मू० ≡)

❀ मुरली की तान ❀

—: गीत :—

मोहन हमारे मधुवन में आया न करो।
जादू भरी यह बांसुरी बजाया न करो॥
सूरत तुम्हारी देख के सलौनी सांवरी।
सुनकर तुम्हारी बांसुरी होती मैं बावरी॥
इस बंसरी पर ये टेर सुनाया न करो।
जादू भरी यह बांसुरी बजाया न करो॥
सरपै मुकट गलमाल कटि पर काछनी सोहै।
कानों पै कुण्डल झूमते मनको मेरे मोहै॥
सो चन्द्रमा का रूप ले लुभाया न करो।
जादू भरी यह बांसुरी बजाया न करो॥
अपनी यशोदा मैया की सौगन्द है तुमको।
माखन चुराने वाले चित चुराया न करो॥

तर्ज फिल्म प्यार की जीत मेरे नैनों ने चोरी किया

हाय तेरे मोहन ने चोरी किया।
मेरा माखन लिया मुझे मार दिया॥ हाय०
सुन २ मैया मेरी फोरीरी गगरिया,
रास्ते में छेड़े देख तोरी उझरिया।

हाय तेरे मोहन ने चोरी किया।
छेड़ता मुझे है जहां रास्ते में पाता है।
माखन हमारा लूट खाता है दिखलाता है॥
हाय तेरे मोहन ने चोरी किया।
लाजके मारें मैं तो मुँह से न बोलती।
आंख मेरी नीची न घूंघट को खोलती॥
हाय तेरे मोहन ने चोरी किया।
हमको सिखा कर तू सिर पर चढ़ाती है।
हमें कहैं बुरी नहीं इसे समझाती है॥
हाय तेरे मोहन ने चोरी किया।

(तर्ज फिल्म आन) आग लगी तनमन में

जमुना जल भरन चली रोक लिया श्यामने।
फोरी मेरी गगरी मुँह नोंच लिया श्याम ने।
जोड़ २ हाथ में तो हाय राम हार गई।
मानी नहीं एक मेरी चुनरी भी फाड़ दई।
पकड़ा कलाई हाथ तोड़ दिया श्याम ने।
फोड़ी मेरा गगरी मुंह नोंच लिया श्यामने।
डगर डगर श्याम तेरा मुझको सताए।

मुरली की तान
छेड़ छाड़ करे सखी मुझको न भाए ॥
अङ्ग अङ्ग मेरा झकझोर दिया श्याम ने ।

(तर्ज फिल्म मान) मान मेरा अहसान

मन मूरख नादान तू कहना मान
केकरलेहरिचरणोंसेप्यार,करले हरिचरणोंसेप्यार
लिया न हरिसे नाम किया क्या काम
तेरा फिर जीवन है बेकार । करिले हरि०
तूप्रेमसे अपने जीवनकोभगवान के अर्पणकरदेरे
तू साँस २ हरिनामका बन्दे सुमिरन करलेरे
तू होगा चौरासी से पार न होगा ख्वार
ये दिल में अपने समझले यार । कहले०
जिन्हेंतू अपना जानरहा है कोई कामनआवेगा
गया वक्तो मूरख मल२हाथसदा पछितावेगा
नहीं आवेगा को तू जपले नाम
नहीं आवेगा कोई काम तू जपले नाम
तो हो जावेगा भवसे पार । करले हरि०

[तर्ज फिल्म बहार] प्यार की बहार लेके

बन्शी बजाके जी दिल को चुराके जी,
कहां छुपे हो मेरे श्याम जी,

बन्शी बजाके मेरे दिल को चुरा लिया।
मीठी मीठी बातों से मुझको लुभा लिया॥
चैन नहीं आवे जीया फड़फड़ावे जी।
आवो जी आवो मेरे श्याम जी,
कहां छिपे श्यामजी मुझको बिसार के।
बन बन में खोज रही तुझको पुकार के॥
मेरा मन तरस रहा नैनों से नीर बरस रहा।
आवो जी आवो मेरे श्याम जी,
नींद गई आंखों की दिलका करार गया।
तेरे बिना मेरे श्याम जीवन से प्यार गया॥
और क्या बताऊं चैन नहीं पाऊं मैं।
आवो जी आवो मेरे श्याम जी,

गाना

भीलनी के घर दोऊ राम लखन आय गये।
प्रेम भरे बेर राम बेर-बेर खाय गये॥
पेट भर के रामजी ने बेर खूब खाये थे।
प्रेम से भीलनी ने रामको जिमाये थे॥

प्रेम की गङ्गा में राम गोता लगाय गए।
प्रेम भरे बेर राम बेर—बेर खाय गए॥
बोले राम भीलनी से ऐसे बेर खाये नहीं।
सीताजी के भोजनों में स्वाद ऐसे आये नहीं,
शिवरी तेरे नन मेरे हृदय में समाय गये।
प्रेम भरे बेर राम बेर—बेर खाय गये॥
मीठे मीठे बेर तेरे लागे हैं सुहावने।
पावन पुनीत स्वच्छ साफ मन भावने॥
लिखते २ शर्मा अपने मनमें शरमाय गये।
प्रेम भरे बेर राम बेर—बेर खाय गये॥
मेरे रामजी गये हैं बनवास सियाजी गईं साथ, कि लक्ष्मण प्यारा।
अयोध्या में कौन हमारा।
कैकई ने जुलम गुजारे हैं।
जो ऐसे पुत्र निकारे हैं॥
अब बिना रामके होगया कुल अंधियार अयो,
जब याद राम की आती है।

दशरथ की फटती छाती है।
थे वही आप जा श्रवण कुमर को मारा ॥
अब प्राण न तन से जाते हैं,
मेरी राम नजर नहीं आते हैं।
अब तुम्हीं कहो कित जाइ नसीब का मारा ॥
अन्धों का श्राप न टलना है।
हमको भी सुरपुर चलना है ॥
अबअन्तसमयपर रामलषणकोहमनेनहींनिहारा
अयोध्या में कौन हमारा ॥

(तर्ज फिल्म अवारा) हम तुमसे मुहब्बत करके सनम

मेरी मटकी मोहन फोड़ गया ।
मैं रोती रही वो हंसता रहा
मेरी पकड़ कलाई तोड़ गया
मैं रोती रही वो हंसता रहा
वो आती थी जमुना जल भर
था पाछे लगीना मुझको खबर
झट हाथ पकड़ झकझोर गया
मै रोती रही वो हंसता रहा

मेरी पकड़ चूंदरी खेंच लई
मैं लाज की मारी बैठ गई
मुँह बना वह कहता रहा
मैं रोती रही वो हँसता रहा

द्रोपदी की पुकार

[तर्ज फिल्म आन] आग लगी तन मन०
द्वार का नाथ हाथ अब है मना।
लुटी मेरी लाज हुआ दुष्टों का सा[illegible]
केश पकड़ खींच रहा दुष्ट मेरा चीर जी।
बैठे रहे देख बड़े बड़े बलवीर जी॥
मुश्कल में तेरे सिवा आवे कोई कामना।
लुटी मेरी लाज हुआ दुष्टों का सामना॥
भरी सभा बीच मुझे पापी रुलाए।
आवो मेरे नाथ रही तुझको बुलाए॥
हँसी न हो मेरी कहीं होऊं बदनाम ना।
लुटी मेरी लाज हुआ दुष्टों का सामना

❁ भजन ❁

मैंने कहा श्सामजी तुम इतना बतावोगे ।
मथुरा में जाके हमें भूल तो न जावोगे ॥
तेरे बिना श्याम पिया ।
लागेगा न मेरा जिया ॥
देख मेरे दिलको पुकार रहा पीया पीया ।
प्रीत को लगाके मुख मोड़ तो न जावोगे ॥
मथुरा में जाके ।
तेरे लिये गली गली बदनाम होई रे ।
जाते हो जो छोड़के तो कहो कब आवोगे ।
मथुरा में जाके ।

❁ भजन ❁

न पकड़ो हाथ मन मोहन
कलाई टूट जावेगी ।
जवाहर की जड़ी चूड़ी
हमारी फूट जावेगी ॥

जबरदस्ती करोगे श्याम
रत्ती भर न पावेगी।
धरी है शीश पर मटकी
हमारी फूट जावेगी ॥
बड़े तुम ढीठ नन्द लाला
पड़ा होगा नहीं पाला।
फिर आखिर को यही होगा
मुहब्बत छूट जावेगी ॥
यह कहना था मुरारी का
लड़कपन था विहारी का।
गले में डाल दी बइयां
बला से रूठ जावेगी ॥

———

[तर्ज फिल्म परदेश] मेरे घूंघर वाले बाल
नाचे मदन गोपाल सखीरी नाचे मदनगोपाल
हाथ में मुरली कांधे कमली गल फूलोंकीमाल
मुखपर मुरली धरकर मोहन ऐसी मधुरबजाई
सुध बुध अपनी खो बैठी मैं हुई सखी बौराई
कह सकूं न दिलका हाल सखीरी—
देख सामरी सूरत उसकी दिल हाथों से जाये
लाख मनाऊं दिलना माने याद न दिलसेजाये
कुछ दीया है जादू डाल सखीरी—
हाथमें मुरली कांधे कमली गलफूलोंकी माल

❀ तर्ज राग बहार तीन ❀

नांचे नन्दलाल नचावै हर की मैया ।
सोटा न राखे सुटिया न राखे ।
बन्सरी के प्रभूजी बौहत बजइया ॥
दूध न पीवे छाछ न पीवे ।
माखन के प्रभूजी बहुत खवैया ॥
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को ।
मात यशोदा बलि बलि जइया ॥

[तर्ज फिल्म दिल्लगी]

मुरली वाले मुरली बजा ।
धुन सुन मुरली की नाचे जिया ॥
रह रह के आज मेरा डोले है मन ।
जाने न प्रीति मेरे प्यारे मोहन ॥
कैसे छुपालूं हाय दिलकी लगन ।
मौसम प्यारा ठण्डी हवा ।
दिल से मिले जाय वोह जादू जगा ॥
मुरली से तेरा है जीया मोहन ।
आंखों में तू फिर नहीं कोई गम ॥
ओ बन्शी वाले तुझे मेरी कसम २।
आज सुनादे वोह धुन जरा ।
रिमझिम सावन की बरसे घटा ॥

मु० व प्रकाशक–बा० घूरेलाल गुप्त, श्रीकृष्ण प्रेस हाथरस ।

कृष्ण की बन्सी ।

अर्थात् भगवान भजन माला ।

प्रकाशक—

देव पुस्तकालय, दरेशी नं० २ आगरा ।

दूसरा—

बैनीराम बु० माईथान आगरा ।

प्रथमवार] सर्वाधिकार स्वरक्षित [मूल्य)॥

शिव की आरती

(तर्ज कमला वाले)

[संग्रह कर्ता रघुवीरसिंह]

शिव शंकर भोले भाले, तुमको लाखों प्रणाम।
कैलाश व काशी वाले, तुमको लाखों प्रणाम॥
वह गंगा शिर जटा तुम्हारे,
अर्द्ध चन्द्रमा मस्तक धारे।
कर त्रिशूल डमरू है न्यारे,
सर्पों की माला वाले ॥ तुम० ॥
अंग बभूत विशाल हैं लोचन,
संकट हारी सोघ विमोचन।
शम्भु तुम्हीं हो संकट मोचन,
भक्तों के रखवाले ॥ तुम० ॥
पार करो शिव मेरी नइया,
तुम बिन औरन कोई खिवैया।
कौन मात और किसका भइया,

दुख सिंध तारने वाले ॥तुम०॥
नाथ डूबती नाव तराओ,
भव सागर से पार लगाओ।
सेवक की अब लाज बचाओ,
संकट हरने वाले ॥ तुम० ॥
घोर घटा घिर आई कारी,
छाई चारों दिश अंधियारी।
उस पर चमके बिजली न्यारी,
रक्षा करने वाले ॥ तुम० ॥
अब गोपाल शरण शिव तेरी,
कहां हो नाथ लगाई देरी।
पेश न कुछ जाती है मेरी,
भक्त तारने वाले ॥ तुम० ॥

भजन नं० २

(व तर्ज सरोता)

टेक। मोहन को कहां छोड़ि आई प्यारी मोरी गुइयां।
लल्ता विसाखा सुनो सखी कहां है कुमर कन्हैया ॥
हाथ जोरि मैं करूं वीनती परूं तुम्हारे पइयां ॥
मथुरा ढूढ़ि वृन्दावन ढूंढौ ढूंढ़ी गोकुल दइयां।
घर २ में मैं पूछत डोलूं, कोई न पता बतइया ॥
सभी सखी यो कहने लागी सुनो जसोदा मइया।
हमने तो नहीं देखौ भारो बंसी को बजबइया ॥

काहे को इतनी घबरावौ, सुनौं जसोदा मइया।
कहै रघुवीर धीर धर माता, (तेरौ) मिलजाय
कुंवरर कन्हैया॥ मोहन को कहां०॥

भजन नं० ३

टेक—लाये ब्रज के बिहारी का सब पालना।
झूलते हैं कन्हैया अजब पालना॥बैठ झूले में मुरली
बजाने लगे। तान उसमें सुरीली सुनाने लगे।
देरहा था निराली, क्या छवि पालना॥ लाये०॥
जब कि ग्राह ने था गज को घेरा वहां॥ उसने हरनाम
कह करके टेरा वहां। छोड़ करके चले थे तब वह
पालना॥ लाये०॥
प्यारी सखियां भी मिल मिल के आने लगीं।
सब मुरारी को आके झुलाने लगीं॥
हिल रहा था वह आहिस्ता जब पालना॥ लाये०॥
मेरे दिल में एक दम से वेचैन हो। बसी याद मोहन की दिन
रैन हो रहे आंखों में हरदम जब पालना॥ लाये ब्रज०॥

भजन नं० ४

(ब तर्ज सरोता०)

टेक—कै सीता कहां खोइगईं प्यारे लक्ष्मण भइया।
तुम्हें यहां का बना गया था सीता का रखवइया। कौन चुरा

कर उसे लेगया जल्द बतादो दइया ॥ कै सीता कहाँ० प्यारे० ॥ बिलकुल सच ये कहा आपने मैं ही था रखवइया। मैं तो छोड़कर कहीं न जाता यहां से सीता मइया ॥ कै सीता कहां० कान आवाज पड़ी थी मेरे चलिये लछिमन भैया। बिना आपके यहां पर मेरी कोई न धीर धरइया ॥ कै सीता कहां० प्यारे०॥ मैं न मृग के पीछे जाता, ना ये आता समइया। जल्दी उसका पता लगावो, कैसी करूं भइया ॥ कै सीता कहां० प्यारे० ॥ कहाँ ढूंढने उसको जाऊं, कोई न पता बतइया। कहै प्रकाश उर धीर धरो तो, मिले जानकी मैया ॥ कै सीता कहां० ॥

गज़ल नं० ५

प्रेम नगर में बनाऊंगी घर मैं।
तज के सब संसार ॥
प्रेम का आंगन प्रेम की छत हो।
प्रेम के होंगे द्वार ॥
प्रेम सखा हो प्रेम पड़ोसी।
प्रेम ही सुख का सार ॥
प्रेम के संग बितायेंगे जीवन।
प्रेम ही आशा धार ॥
प्रेम सुधा से स्नान करूंगी।
प्रेम से होगा सिंगार ॥
प्रेम ही धर्म है प्रेम ही कर्म है।
प्रेम ही सत्य बिचार ॥

भजन ६

सुनादे, सुनादे, सुनादे, कृष्णा ।
अब बांसुरी की तान सुनादे कृष्णा ॥
बतादे बतादे बतादे कृष्णा ।
तू गीता वाला ज्ञान बतादे कृष्णा ॥
मथुरा वाले कृष्ण मुरारी । तूने सारी दुनियां तारी ॥
चरादे चरादे चरादे कृष्णा । फिर आनकर के गौवें चरादे कृष्णा ॥
सांवली सूरत फिर दिखलाजा । हिन्दू धर्म का डंका बजाजा ॥
बजादे बजादे बजादे कृष्णा । प्रेम वाली बांसुरी बजादे कृष्णा ॥
यह भारत जनता सारी भुलाई । सुध बुध सारी क्यों बिसराई ॥
जगादे जगादे जगादे कृष्णा । यह सोता भारत आन जगादे कृष्णा ॥
धर्म गिलानी जग में फैली । भूल गए सब रीती पहिली ॥
निभादे निभादे निभादे कृष्णा । तू गीता वाला प्रण निभादे कृष्णा ॥
गज ने बुलाया तब तुही आया । द्रोपदि का तूने चीर बढ़ाया ॥
बढ़ादे बढ़ादे कृष्णा । अब भारत वाली शान बढ़ादे कृष्णा ॥

भजन ७

कब प्रभु गढ़ सिरसा में आओगे, भात भरन रामा को ।
आप तो जाय द्वारिका छाये । अरे मेरी यहां पर हँसी कराओगे ॥
हो आंधीन आपको टेरू । कब तक टेर प्रभू सुन पाओगे ॥
तुम को छोड़ भजूं मैं किसको । नैया मेरी आपही पार लगाओ ॥
दास तुम्हारो आज पुकारे । कब तक विनय आप सुन पाओगे । भा०
तुम नरसी को भात भराओ । अरेकि रघुवर कब तुमही गुन गाओ ॥

भजन नं० ८

सुनेरी मैंने निर्बल के बलराम।

पिछली साख भरूं सन्तन की, अड़े सवारे काम ॥ १ ॥
जब लगि गज बल अपना बरत्यौ, नैन सरयो नहीं काम।
निर्बल बल राम पुकारयो, आये धाये नाम ॥ २ ॥
द्रुपद सुता निर्बल भई ता दिन तजि आये निज धाम।
दुःशासन की भुजा थकित भई, बसन रूप भये श्याम ॥ ३ ॥
अप बल तप बल बाहु-बल, चौथौ है बल धाम।
सूर किशोर कृपा तै सब बल हारे को हरि नाम ॥ ४ ॥

भजन नं० ६

निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।
स्वासों के स्वर झँकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥
आकाश हिमालय सागर में पृथ्वी पाताल चराचर में।
यह मधुर बोल गुँजार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे ॥
जब दया दृष्टि हो जाती है जलती खेती हरियाती है।
इस आश पै जन उच्चार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे ॥
सुख दुखों की है चिंता ही नहीं भय है विश्वास न जाय कहीं।
टूटे न लगा यह तार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे ॥

तुम तो करुणा के धाम सदा सेवक है "राधेश्याम" सदा।
बस इतना सदा विचार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे॥

॥ दादरा ॥ नं० १०

सब जुआ में गँवाइ आये अरे मोरे सइयां।
गिन्नी हारे नोट हारे पैसा व रुपय्या।
ऊपर से मुझ को पेंठ दिखावें कैसी करूं दइया॥
बाली हारे बुन्दे हारे हारि गए नथुनियां।
सारा जेवर मेरा हारे कासे कहूं मइया॥ सब०॥
कपड़े हारे लत्ते हारे हार गये घँगरिया।
लाख तरह मैं समझा हारी एक न मानी सइयां॥
उठूं सवेरे चकिया पीसूं बांधूं छोरू गइयां।
ताहू पै सइयां डंडन मारे कोई न मेरी सुनइयां॥
पानी पीने तक को घर में रखी न एक लुटइया।
रामचन्द्र कहे सुनो जुआरी जूआ न खेलो भइया॥
सब जुआ में गँवाइ आये अरे मोरे सइयां॥

मल्हार ११

अरी बहना कुछ नहिं मोय सुहाय, दीखेना मेरो लाड़िलो।
चैत महीना ऐसो री आयो, जग से मेरे कुमर उठायो।
फांसी पर सुत को लटकायो, होत कलेजा में पीर॥ दीखे०॥
गैया सी मैया डकरावे, ताको ख्याल तुम्हें नहिं आवै।

उठ २ धरनि पछाड़ें खावै, गैया सी रही डकराय ॥ दीखे० ॥
सावन में सब घर २ झूलैं, मेरे दिल में उठती हूलैं।
बेटा को हम कैसे भूलैं, होत कलेजा में साल ॥ दीखेना० ॥
चैत महीना भयो दुखदाई जाने मेरी गोद खलाई।
अब न बचूंगी बहन बचाई, मारूं गले में शमशीर ॥ दीखे० ॥
रघुवर कथि यह वचन उचारो, सुखपालसिंह कर जोड़े ठाड़ो।
रामप्रसाद सासनी वारो, है रहो बहुत अधीर ॥ दीखेना० ॥

भजन १२

जाऊं जाऊं रे सामलिया तुम पर वारना रे। जब से जन्म लियो हरि ब्रज में सबको दुख हरो पक छन में जसुदा भरम भुलानी झुलावैं पालना रे। मात पिता की बन्दि छुड़ायो नन्दराय घर धेनु चरायो, कूदि पड़े कालीदह विषधर नाथना रे। केशी कंस हते ब्रज रक्षक अका बका सुरनायक तक्षक, यमला अर्जुन और पूतना तारना रे। इन्द्र रिसाय चढ़े ब्रज ऊपर, कोऊ न राखन हारा भू पर कृपा करो कान्हा नख पर गिरवर धारना रे॥

भजन १३

श्याम को सँदेशा ऊधो पाती लेके आयो रे। पाती तो उठाय लीन्ही छाती सों लगाय घूंघट की ओट देके ऊधो समझायो रे। बसती उजाड़ दीनी, उजड़ी बसाय लीनी, कुबजा पटरानी कीनी, मोहि न सोहायो रे। सूर श्याम जी के आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भसम रमायो रे॥

व्यौपारियों को शुभ सूचना ।

हमारे यहां की कुछ प्रकाशित पुस्तकें ।

बारहमासी संग्रह	-)	* तेज प्रकाश भजनावली	=)॥
वेदों का डङ्का	)॥	* ऐतिहासिक भजनावली	॥
भजन रामायण	)॥	* स्त्री गीत मङ्गलाचार	।=)
ईश्वर प्रार्थना	)॥	* भर्तृ हरि शतक	॥)
वैदिक सन्ध्या	)॥	* विदुरनीत	॥)
हवन मन्त्र	)॥	* चाणक्य नीति	।=)
सुकन्या प्रार्थना	)॥	* वैद्य जीवन	॥)
बाल प्रार्थना	)॥	* सरल व्यौपार	।)
जनकपुर की गारी	-)	* पाखन्ड खन्डनी	।)
महादेव पार्वती के व्याह की गारी	-)	* आर्य भजन कीर्तन	=)
		* सूर्य पुराण बड़ा	॥)
फुदकती मैंना	=)	* भगवत मङ्गल	।)
भक्ती सागर	=)	* वेदान्त दर्शन दोनों भाग	२)
मनुष्य कर्तब्य	-)	* निहालदे की मल्हार	)॥
अंग्रेजी शिक्षा	।)	* बेला के गौने की मल्हार	)॥
महिला सुधार भजनावली	=)	* छु० बूड़ी कपिला गाय०	॥)

इसके अतिरिक्त हर स्थानों की छपी हुई पुस्तकें हमारे यहां से मँगाइये । व्यौपारियों को भर पूर कमीशन दिया जायगा ।

मिलने का पता—

देव पुस्तकालय, दरेशी नं० २ आगरा ।

दूसरा पता—

बैनीराम बु०, माईथान आगरा ।

सिर्फ टाइटिल भारत इलेक्ट्रिक मशीन प्रेस, हाथरस में छपा ।

भजन प्रभाती।
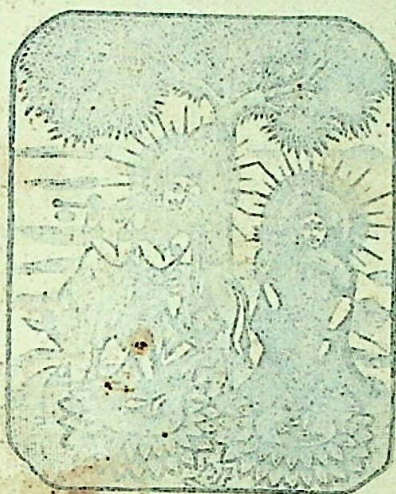
प्रकाशक—
हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ भजन प्रभाती ।

प्रभाती १

सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई ॥ टेक ॥
रसना रस नाम लेत, संतन को दरश देत, विहँसत मुख मन्द २ सुन्दर सुखदाई ॥ केसर कौ तिलक भाल, मानों रवि प्रात काल, श्रवण कुण्डल झिलमिलात रात पति छबि छाई ॥ मोतिन की गले माल, तारा उडुगन विशाल मानों गिरि शिखर फोरि सुरसरि चलि आई । दर्शन चमक चतुर चाल, नैना मृग सम विशाल, अरुण नैन भृकुटि भाल, नासिका सुहाई ॥ सुरसरि के तीर नीर विहरत रघुवंश वीर तुलसीदास हरषि निरखि चरनन रज पाई । सीतापति रामचन्द्र रघुपति० ॥१॥

प्रभाती २

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियां

॥टेक॥ किलकिलात उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय झटपट माय गोद लेत दशरथ की रनियां। अचल रज अंग झार विविध भांति सों दुलार तन मन सब वारि डारि कहत मृदु बचनियां॥ मेवा मोदक रसाल भावै सो लेहु लाल वारूँ तन मनियां॥ 'तुलसीदास' अति आनन्द देखके मुखारविन्द रघुवर के छवि समान रघुवर छविछनियां॥ २॥

प्रभाती (३)

प्रात समय वृषभान नन्दिनी यशुमति सुतहिं जगावै॥ उठो प्राणपति भोर भयो है दिनकर दरश दिखावे॥ कुमुद बन्धुकर कांति मलिन भई सुरभी शिशु पय प्यावै। मुख तमोल फीके अब लागे वा अस बचन सुनावै॥ शीतल माल भई मोतिन की चक्रवाक सुहरावै॥ प्राणनाथ विधु बदन दिखाके चिन्तामणि बलि जावे। प्रात समय वृषभान० ॥३॥

प्रभातीं ४

जागिये कृपानिधान पंछी बन बोले ॥ टेर ॥
रवि को किरण उदय भयो रजनी को तिमिर
गयो भोर गुञ्ज करत गान कमलन दल खोले॥
शशि की रैन शिथिल भई चकई पिय मिलन
गई पवन मन्द अति सुगन्ध पल्लव द्रुम डोले॥
वेद धुनि पढ़त ज्ञान गन्धर्व मुनि अति सुजान
निरत करत किन्नर सब भस्म अंग घोले॥
'तुलसीदास' अति आनन्द निरखि के मुखार-
विन्द विप्रन को देत दान मोती अनमोले॥
जागिये कृपानिधान पंछी बन बोले॥ ४॥

प्रभाती ५

शंकर महादेव देव सेवक सर जाके ॥ टेर ॥
भस्म अंग शीश गंग बाहन वृषभ प्रचंड गौरी
अर्द्धंग संग भंग रंग छाके॥ लपटि कंठ व्याल जात
ओढे तन मिरग छाल मुण्ड माल चंद्रभाल दृग
विशाल जाके॥ पावत नाहिं पार शेष ध्यावत तहुर
नर मुनेश गावत गिरजा गणेश ब्रह्मादिक थाके॥

दानव कुल गन हरे वासों बहु शेष गरे डमरू कर ध्यान धरे नील कंठ जाके। वरणत जस तुलसीदास गिरजापति चरण आस ऐसे वर शेष नाथ भक्ति हेत राखें ॥ शंकर० ॥ ५ ॥

प्रभाती ६

पंचवटी परम कुटी पावन तृण छाई। जहां आय वास किया सीता रघुराई ॥ टेक ॥ कंचन का मृग निहार बोली मिथिलाकुमारि या मृग की छाल नाथ मेरे मन भाई। नाना विधि जोग साधि शंकर मुनि नारदादि ब्रह्मा सनकादि जहां ध्यावत कठिनाई। इतना सुन धनुष धार लछिमन तुम खबरदार या बन में डोलत हैं राक्षस समुदाई। पालस संत जन सुजान माया मृग उतरि जान कहूं दूर कहूं निकट कभी छिपजाई ॥ जातो प्रभु दूर जान मारो मृग तान बाण सुमिरत हरिनाम गिरा निमल पई ॥ निश्चर एक अधम

जाति दीनी गति बाँहि विमल 'तुलसी' पै कृपालु नाथ जैसे रघुराई ॥ ६ ॥

प्रभाती ७

मोहन जागि हो बलि गई ॥ टेक ॥ ग्वाल बोलें द्वार ठाड़े बन की बेर भई। पीतपट करि दूर मुख ते छाँडि दे अलसई ॥ अति अनन्द होत यशुमति देख छवि नित नई ॥ जागि जंगम जीव पशु खग और वृन्द सबई ॥ 'सूर' को प्रभु दरश दीजै अरुण किरण छाई ॥७॥

प्रभाती ८

मेरे तो गिरधर गुपाल दूसरा न कोई। अँसुअन जल सींच २ प्रेम बेलि बोई ॥ जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥ आई हौं भक्ति जान जंगत देख रोई ॥ जगत मात माई बन्धु अपना नहिं कोई। साधुन ढिंग बैठि २ लोक लाज खोई। अब तो बात फैलि गई जाने सब कोई ॥ दासी 'मीरा' शरण आई

होनी हो सो होई। मेरे तो गिरधर गुपाल दूसरा न कोई ॥ ८ ॥

प्रभाती ६

जागिये गोपाल लाल ग्वाल ठाढ़े द्वार। मथुरा में जन्म लियो चन्द्रमा मिलन भयो तारागण देखियत नहिं तारन किरन बाढ़ं ॥ सुकलित भये कमल जाल गुंज करत भृंगमाल प्रफुल्लित बन पुहुप जाल कुमुदनि कुम्हलानी। गंधर्व गुन गान करत मान दान धरत हरत सकल आये कहत वेद बानी ॥ बोलत नंद बार २ मुख देखूं तब कुमार गायन भई बड़ी बार वृन्दाबन जइबे। जननी कहत सुनो श्याम जानत जीय रजनी तात। 'सूरदास' प्रभु कृपाल तुमको कछु खबइबे ॥ ९ ॥

दशरथ के लाल को जगाय रही जानकी। टेक ॥ उठो प्यारे भोर भयो समय गई राति की। दीपक सब मलिन भयो उदय भई भानु

की । माता सब जाग रहीं दर्शन के आस की । बार २ सब टेरें नाम लै लै आपकी ॥ बाल सखा आय गये द्वारे सब ठाढ़े भये प्रेम बार मगन भई करुणा निधान की । घर घर आनन्द भये नर नारी अवध की ॥ 'तुलसी-दास' अघ मिटे भजन कर राम की ॥ दशरथ के लाल को जगाय रही जानकी ॥१०॥

प्रभाती ११

प्रात समय रघुवीर जगावै कौशिल्या महतारी ॥ टेक ॥ उठो लालजी भोर भयो है सुर नर मुनि हितकारी । ब्रह्मादिक नारद इन्द्रादिक सनकादिक ऋषि चारी । वाणी वेद विमल जस गावत रघुकुल जस विस्तारी ॥ बन्दीजन गन्धर्व गुण गावें नाचत दे दे तारी । सैन सहित शिव द्वारे ठाढ़े होत कुलाहल भारी ॥ सुनि प्रिय वचन उठे रघुनन्दन नैनन पलक उघारी ॥ चितवन अभय कियो सचराचर मुदित भये नर नारी । जागे भरत लषन

रिपुसूदन जागी जनक दुलारी ॥ अवधपुरी नर नारी जागे सरयू पंथ हितकारी ॥ भरत, शत्रुहन चमर छत्र लिये जनक सुता लिये झारी । मेवा पान लिये कर लछिमन भर कंचन की थारी । सुनि प्रिय बचन उठे रघुनंदन नैनन पलक उघारी ॥ चितवन अभय किये सचराचर मुदित भये नरनारी ॥ कर अस्नान दान नृप दानी भोजन कंचन झारी । रतन सिंहासन मध्य विराजे सुन्दर अवध बिहारी । कीट मुकुट कर धनुष बिराजे कुण्डल की छवि न्यारी ॥ जै जै कार करत जन माधो तन मन बलिहारी ॥ प्रात समय० ॥ ११ ॥

प्रभाती १२

तुम बिन श्रीकृष्णचन्द्र और कौन मेरो ॥टेक॥ जल में पग धरत ही आन ग्राह घेरो । मैं तो बलहीन नाथ वाहि बल घनेरो ॥ दशहुं दिशा हेरि नाथ करुणाकर टेरो । अब की बार राखि लेउ बढ़त जन तेरो ॥ दीनन की

सुनत देर करत नाहिं नेंक देर द्रोपदी की लाज काज तुरत कियो फेरो ॥ गोपीचन्द मदनमोहन आयो शरण तेरो ॥ 'सूर' के प्रभु चित्त धरो अब की निरबेरो । तुम बिन श्री कृष्णचन्द्र और कौन मेरो ॥ १२ ॥

प्रभाती १३

तजो रे मन हरि विमुखन को संग । जाके संग कुमति उपजत है होत भजन में भंग ॥ तजो रे मन हरि विमुखन को संग । कागा कहा कपूर चुगाये श्वान नहाये गंग ॥ खर को कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग ॥ तजो रे मन हरि विमुखन को संग ॥ कहा होय पय पान कराये विष नहिं तजत भुजंग ॥ 'सूरदास' काली कामरि पै चढ़ै न दूजो रंग । तजो रे मन हरि० ॥ १३ ॥

प्रभाती १४

दयानिधि तेरी गति लखि न परे । धन ते धर्म, धर्म से अधरम, अकरम कर्म करे ॥

दयानिधिं० ॥ पिता बचन मेट सो पापी सो प्रहलाद करै । ताकी बन्दि छुड़ावन कारण नरसिंह रूप धरे ॥ दयानिधि० ॥ एक गऊ जो देते विप्र को सो सुरलोक तरे । कोटि गऊ राजा बृष दीनी सो भव कूप परे ॥ दयानिधि०॥ गुरु वशिष्ठ अति ही गुण आगर रुचि रुचि लगन धरे । सीता हरण मरण दशरथ को विपति में विपति परै ॥ दया० ॥ वेद विदित तेरो यश गावे सो वलि यज्ञ करै । ताको बाँध पाताल पठायो कैसे 'सूर' तरै ॥ दया०॥ १४ ॥

प्रभाती १५

राम को अधारा सीताराम को अधारारे । मेरी २ कहत जात रैन दिन सारारे ॥ सांचो हरिनाम और धुन्ध को पसारारे ॥ भक्तन पै भीर परी आन खम्भ फारारे । हिरनाकुश मारि के प्रहलाद को उबारारे । भस्मासुर भस्म किया शंकर दुख टारारे ॥ खेलत २ गेंद गिरी

जमुना बीच धारारे । अबतो गेंद मिलत नाहिं नंद को दुलारारे॥ कालीदह में कूद परे कालिया को नाथारे। कुवालियाके दंत तोरि कंसको पछारारे, लंका से अचल राज छिनमें बिगारारे । दुष्टनको मार२ संतको उबारारे । रामको०॥द्रोपदीकी लाज राखी सभा चीर बाढ़ारे । भिलनी के बेर खाय कीन्हा निस्तारारे ॥ रामको० ॥ 'सूरदास'काह कहूँ नाहिं जानन हारारे । उग्रसेन को राज दियो होत जय जय कारारे ॥ रामको०॥२१॥

प्रभाती १६

जागिये प्राणनाथ है गयो सबेरा । रवि की किरन भई तेज चकई चली प्रेम हेत सखियन रई हाथ लेत तनुक नहिं सबेरा ॥ जागिए०॥ भँवर करत गुञ्ज गान जागिए श्रीगुन निधान दान द्वारे दीजै दान टरी जात बेरा ॥ जागिए० रांभत हैं बच्छ गाय बाट तकत तुम्हारी माय बेग दुहो कृष्ण गाय मानो बचन मेरा ॥

जागिए प्राण० ॥ पूजवो रघुनाथ आस भोज-राज तुम्हारो दास द्वार ठाडो अति हुलास यही प्राण मेरा ॥ जागिए प्राण० ॥ १६ ॥

प्रभाती १७

बांसुरी बजाई आज रंग से मुरारी । शिव समाधि भूल गई मुनि मन की तारी । वेद पढ़त ब्रह्मा भूले, भूले ब्रह्मचारी । सुनत ही आनन्द भयो लागी है करारी ॥ रम्भा सब ताल चूकी भूली नृत्यकारी । यमुना जल पलटि बहो सुधि ना सम्हारी ॥ श्री वृन्दाबन बंशी बजी तीन लोक न्यारी । ग्वाल बाल मगन भये सब ब्रज के नरनारी। 'सूर' किशोर मदन मोहन के चरणन की बलिहारी ॥१७॥

प्रभाती १८

सूरज निकला हुआ सबेरा तू क्यों अब तक सोता है । काम, क्रोध, मद लोभ का बोझा तू सिर पर क्यों ढोता है।।भवसागर में आकर बन्दे क्यों तू खाता गोता है । तन पवित्र

अपने में प्यारे पाप बीज क्यों बोता है। कोई संग नजावे तेरे क्या बेटा क्या पोता है। कहै भक्त जन सुन प्यारे बन्दे उमर बृथा क्यों खोता है ॥ ०८ ॥

प्रभाती [१६]

लटक चलत कृष्णचन्द्र बाजत पैजनियां ॥ टेक ॥ भाजत कहं द्वार जाय धावत पुनि गहो माय कबहुँक बन ओर जात देखन को गैया। लट पट पग धरत जात अटपट बातें बतात यशुमति लखकर सिहाति पकड़ लेत बहियां ॥ झिझकत मुख को निहार किलकत बहु बार।२ माखन हित शरि डारि रोवत दुतकैयां झुनुक झुनुक चलत चाल निरखत सब गोपी ग्वाल चिंतामणि हुई निहाल छवि पर बलि जैया ॥ १९ ॥

प्रभाती [२०]

नन्दजू के बारे कान्ह छोड़दे मथनियां ॥टेक॥ बार २ कहै मति यशमति की रनियां।

नैक रहो माखन लेवो मेरे प्राण धनियां ।
और जानि करौ रार बलि गई हां छबिनियां ॥
सुर नर जाको ध्यान धरैं धरै सारी दुनियां ।
ताको नंदरानी मुख चूम लीनी दुनियां ।
सहसानन गुण जो गनत भजत तिहि नवलियां॥
'सूरश्याम' देव सकल मूली गोप रनियां ।

प्रभातीं २१

देखोरी एक बाला जोगी द्वारे मेरे आया है री ॥अन्तरा॥ पीताम्बर बाघंबर ओढे शीश नाग लिपटाया हैरी। माथे बाके तिलक चन्द्रमा योगी जटा बढ़ाया हैरी ॥ देखोरी० ॥ लेभिक्षा निकली नंदरानी मोतियन थार भराया हैरी । ले भिक्षा योगी घर जाओ आसन को मेरा गुपाल डराया हैरी ॥ देखोरी० ना चाहिये तेरी दुनिया दौलत ना चाहिये तेरी माया हैरी। अपने गोपालजी का दरश दिखादे दर्श काज जोगी आया हैरी ॥ देखोरी० ॥ ले बालक निकली नंदरानी योगी दर्शन पाया हैरी ॥

सात बार परिकरिमा करके श्रृङ्गी नाद बजाया हैरी ॥ देखोरी० ॥२१॥

प्रभाती २२

जागो बंशी वारे ललना जागो मेरे प्यारे ॥ टेक ॥ रजनी बीती भोर भयो है घर २ खुले किवारे । गोपी सब दधि मथन सुनत हैं कंगना के झनकारे । उठो लालजी भोर भयो है सुर नर ठाड़े द्वारे ॥ ग्वाल बाल सब करत कुलाहल जय २ शब्द उचारे । माखन रोटी हाथ में लीनी गौअन के रखवारे । 'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर आये शरण तिहारे ॥ जागो० ॥ २२ ॥

प्रभाती २३

जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ॥टेक॥ माता जाकी पारवती पिता महादेवा । लडुअन के भोग लगें संत करें सेवा ॥ जै गणेश० ॥ एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी । माथे सिंदूर सोहै मूसे की सवारी ॥ अन्धेन को आँख

देत कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा 'सूरदास' शरण आयो सुफल कीजै सेवा॥ जै० ॥२३॥

प्रभाती २४

प्रीतम जानि लेहु मन माहीं। अपने सुख सों सब जच बांधो कोउ काहू को नाहीं॥ सुख में आय सबहिं मिल बैठत रहत चहूं दिशि घेरें। विपति पड़ी सबही संग छोड़ा कोउ न आवत नेरे॥ घर की नारि बहुत हित जासों सदा रहत संग लागी। जबही हँस तजो यह काया प्रेत २ कर भागी। जो विधि को संसार बना है जासों नेह लगायो। आये काल निकट 'नानक' जो हरि बिन काम न आयो

* श्री भजन प्रभाती समाप्तम् *

मुद्रक-पं० पुरुषोत्तमदास मुरलीधर शर्मा, "हरीहर मशीन प्रेस", मथुरा।

संसार में सुख मय जीवन व्यतीत कीजिये

नीचे लिखी पुस्तकें हमसे मंगाइये उनको ध्यान से पढ़िये तथा उनके बताये रास्ते पर चलिये, केवल इन्हीं पुस्तकों से आप गुलामी से बच सकते हैं, तथा स्वास्थ्य लाभ करते हुये दुनिया में स्वतन्त्र व्यापार करके अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं। यह हमारा दावा है कि इस प्रकार की स्वतन्त्र व्यापार तथा दस्तकारी सिखाने वाली पुस्तकें आपने बहुत कम देखी होंगी, पुस्तकें मंगाने में देरी न करें, वर्ना पीछे पछितायेंगे।

हरफन मौला	।।।)
हुनर शिक्षक	।।।)
रंग रेज शिक्षक	।।)
फोटो ग्राफी शिक्षा	१)

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा।

मुद्रक पं० पुरुषोत्तमदास मुरलीधर शर्मा, हरिहर मशीन प्रेस, मथुरा।

सीता बनवास
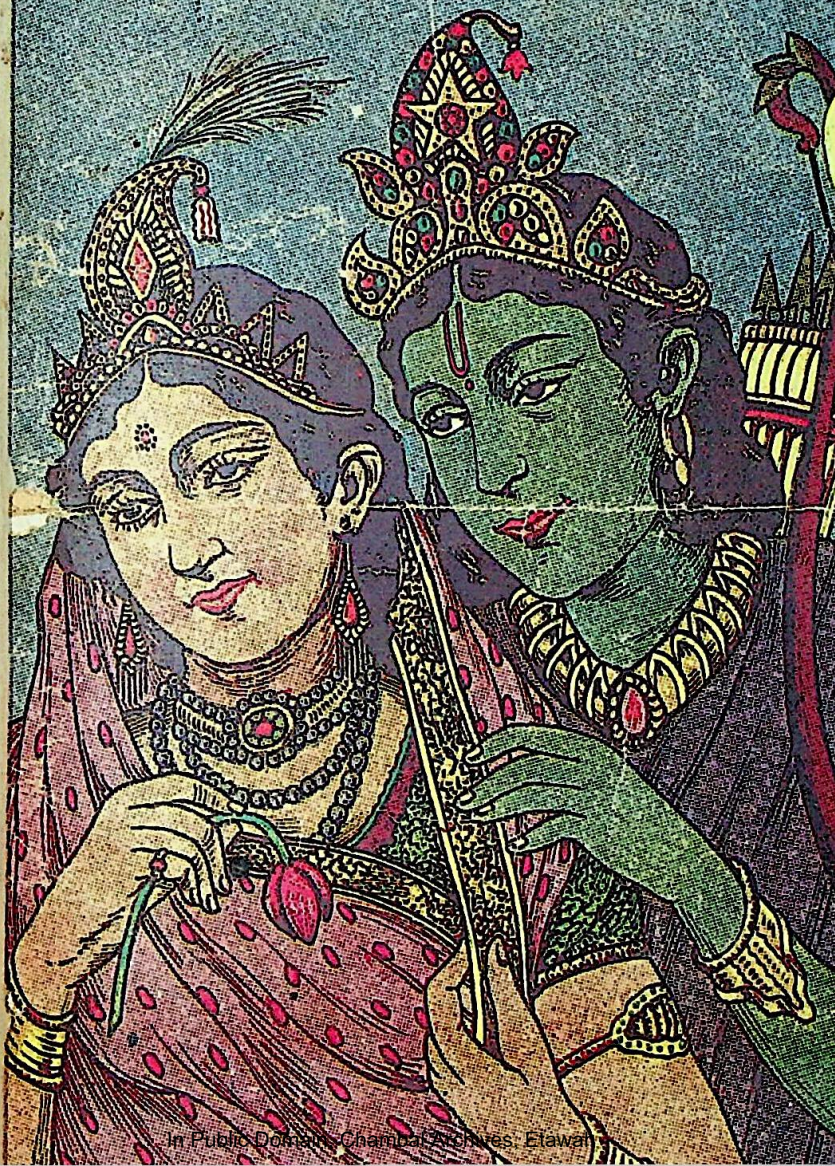
❀ श्री गणेशाय नमः ❀

सीता बनवास
उर्फ़—
सीता हरण

श्री रामचन्द्र का वन यात्रा-विलाप

पार कर दो अब तो केवट वनको जाते हैं हम ।
संग में हैं तीन मूरत, अवध से आते हैं हम ।।
देर क्यों करते हो केवट, नैया लादो घाट पर ।
ले लो उतरैया तू अपनी, ठाढ़ पछताते हैं हम ।।
संग नारी है सुकुमारी प्राण, प्यारी है खड़ी ।
बन्धु मेरा वयस थोड़ा इससे घबड़ाते हैं हम ।।
देर क्यों करते महेन्दर शाम अब तो हो गई ।
रात के जागे हुए हैं नींद के माते हैं हम ।।

॥ चौपाई ॥

उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता ।
सिया राम प्रिय लखन समेता ॥
केवट उतरि दण्डवत् कीन्हा ।
प्रभु सकुचे कछु यही नहिं दीन्हा ॥
पिय हियकी सिय जानन हारी ।
मनि मुंदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपालु लेउ उतराई ।
केवट चरन गहेउ अकुलाई ॥
नाथ आज़ मैं काह न पावा ।
मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
बहुत काल मैं कीन्ह मजूरी ।
आज दीन्ह विधि सब भरिपूरी ॥
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे ।
दीन दयालु अनुग्रह तोरे ॥
फिरती वार प्रभु जो कछु देवा ।
सो प्रसाद मैं सिर धरि लेवा ।

सखी तुम्हारी कोई पास न होवेंगी वहाँ।
अकेले वर्ष तुम्हें चौदह बिताने होंगे ॥
दुख देती हो क्यों कोमल तनको।
क्यों नाहक सताती हो मन को ॥
हजारों वनमें निशाचर है सताने वाले।
कपटका रूप दिखा नारि चुराने वाले ॥
कहीं हैं सर्प कहीं सिंह भयंकर डोलें ॥
न लौटते हैं वहाँ से कभी जानेवाले।
नहीं जाते हैं हम वन दो दिन को ॥

गजल।

सुन्दरी तुम जो खड़ी हो साथ जाने के लिये।
किस लिए वन जा रही हो कष्ट पाने लिये॥
तुम अकेली किस तरह बनमें रहोगी उस जगह।
एक दीपक भी नहीं मिलता जलाने के लिये ॥
छूट जायेंगी तुम्हारी सब सखी मिथलेश की।
कोई भी वन में न होगी दिल लगाने के लिये ॥

दूध, घी मिष्टान मेवा कुछ नहीं वनमें रखा।
बस वही फल फूल सूखे रोज खाने के लिये॥
माता वैसी ही विकल मेरे लिये हैं जानकी।
जा रही हो और तुम उनको रुलाने के लिये॥
फिर मिलेंगे सुन्दरी तुमसे अगर है जिन्दगी।
देर क्या लगती है चौदह वर्ष जाने के लिये॥

समाप्त

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :-
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय,
ज्ञानवापी, बनारस सिटी
मूल्य =)

मीरा भजनावली

रङ्गीन चित्र सहित

न्यू फाईन आर्ट प्रिन्टिङ्ग काटेज, आगरा। मू० ≡)

* गणेशाय नमः *

* मीरा भजनावली *

भजन १

मीरा तेने नैंना गंवाये रोय रोय।

जहर का प्याला राणा जी ने भेजा, पीबत अमृत होय॥ मीरा०॥ सांप सिटारा राणा जी ने भेजा, खोलत हरबा होय॥ मीरा०॥ सूलन की सेज राणा जी ने भेजी, सोबत फूलन होय॥ मीरा०॥ दरद की मारी मीरा बन वन डोले वैद्य मिला नहीं कोय। मीरा की पीर जबही मिटे जब वैद्य समलिया होय॥ मीरा०॥ मीरा के प्रभू गिरधर नागर, चरण कमल चित होय॥ मीरा तेने नैना गंवाये रोय रोय॥

भजन २

सखी री कहीं देखे री घनश्याम।

मोर मुकुट पीताम्बर सोहै कुण्डल झलकें कान॥ सखी०॥ सांवरी सूरत पे तिलक बिराजे, बंसी

हरे मेरे प्राण ॥ सखी० ॥ बरसाने से चली गुजरिया नन्द बाबा का ग्राम ॥ सखी० ॥ आगे केशव धेनु चरावत, लगेप्रेम के बाण ॥ सखी० ॥ वृन्दावन की कुञ्ज गली में नूपुर रुनझुन लाना, मीरा को प्रभू दर्शन दीना, ब्रंज तज अन्त न जाना ॥ सखी० ॥

भजन ३

मैं तो गिरधर के गुण गाऊँ, ओ रामा गोविन्द के गुण गाऊँ। सास कहे मीरा भई बाबरी, लोग कहें कुलनासी, पद घूंघरू बाँध मीरा नाची, ओ रामा गोविन्द के गुण गाऊँ ॥ मैं तो० ॥ सास सुसर का कहा न मानूँ घूँघट मुख न छिपाऊँ, साधु सन्त संग करूँ कीर्तन, ले खरताल बजाऊँ । ओ रामा गोविन्द के गुण गाऊँ ॥ मैं तो० ॥ जो सुन पाऊँ आवे मेरा गिरधर, डगर में नैन बिछाऊँ, बंसीधर की बंसी ले हँस हँस कण्ठ लगाऊँ । ओ रामा गोविन्द के गुण गांऊँ ॥ मैं तो० ॥

भजन ४

अपने राम मिलन के काज आज मैं जोगिन हो जाऊँगी। कुटम कबीले से नाता तोड़ वृन्दाबन जाऊँगी, तन के वस्त्र उतार के फैकूँ भस्म रमाऊँगी ॥ अपने० ॥ हाथ अंगूठी उतार के फैकूँ खरताल बजाऊंगी, साधु संत संग करूं कीर्तन हरि गुण गाऊँगी ॥ अपने० ॥ हार हमेल उतार के फैंकूँ माला अपनाऊँगी, प्रभु के आगे बैठ के मैं तो अलख जगाऊँगी ॥ अपने० ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर सूरदास के श्याम, अपने प्रभु के चरणों में शीश झुकाऊँगी ॥ अपने श्याम मिलन के काज, आज मैं जोगिन हो जाऊँगी ॥

भजन ५

मीरा कहन लगी राणा से तुमने श्याम नहीं जाने। ताजी जल प्यालिन भरवाये, बिस भी घुलवाये। पीवत ही मीरा के देखो अमृत हो आये ॥ मीरा कहन० ॥ बाँस पिटारा राणा

मँगाये सांप बन्द करवाये, ऐसी कृपा भई श्याम की खुद दर्शन दिखलाये ॥ मीरा कहन० ॥ काठ की सेज राणा ने बनबाई सूल भी गड़बाये, सोवत ही मीरा के श्याम ने फूलन बिछवाये ॥ मीरा कहन० ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर राणा समझाये, ऐसी कृपा भई मीरा की श्याम के दर्शन करवाये ॥ मीरा कहन० ॥

भजन ६

मोरे मन राम चरण सुखदाई ॥ टेक ॥

जिन चरनन से निकली सुरसरि शंकर जटा समाई, जटा शंकरी नाम धरयो त्रिभुवन तारन आई ॥ मोरे मन० ॥ जो केवट कहूँ पावन, कीन्हा प्रभु ने नाव चढ़ाई ॥ मोरे मन० ॥ दण्डक बन प्रभु पावन कीन्हो मुनियन दुःख मिटाई, जो ठाकुर तिहूँ लोक के स्वामी कपट कुरङ्ग सङ्ग धाई ॥ मोरे मन० ॥ कपि सुग्रीव बन्धु भये व्याकुल जो सिर छत्र धराई, रिपुको अनुज विभीषण भेट्यो मीरा की पीर नसाई ॥ मोरे मन राम चरण सुखदाई ॥

भजन ७

सखीरी मैं तो गिरधर रङ्ग राती।
पचरङ्गी मेरी चोली रंगदे मैं झुरमुट खेलन जाती, झुरमुट में मेरो साँईं मिलेगो खोल अडम्बर जाती ॥ सखीरी मैं० ॥ चन्दा जायगा सूरज जायगा जायगा धरण अकासी, पवन पानी दोनों जायेंगे अटल रहे अविनाशी ॥ सखीरी मैं० ॥ सूरत घृत का दिवला सजाले मनसा की करले बाती। प्रेम हरी का तेल बनाले जगा करें दिन राती ॥ सखीरी मैं० ॥ जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजें पाती। मेरे पिया मोहिं माहि बसत हैं कहूँ न आती जाती ॥ सखीरी मैं० ॥ पीहर बसूं न बसूं सासरे सत गुरु शब्द संघाती। ना घर रामेना घरतेरा मीरा हरि रंग राती ॥ सखीरी मैं० ॥

भजन ८

भगवान की मुहब्बत पर तन मन निसार करना।
सुबह शाम लेके माला मन में पुकार करना ॥

दुनियां की पाप बातें सब को ही भुलाना ।
दो दिन की जिन्दगी को बिरथा न गमाना ॥
जिस तौर बने तैसे उसका सुधार करना ।
सुबह शाम लेके माला मन में पुकार करना ॥
तरने की उम्मीदों को मन भूले ही जाते हो ।
ममता के पालने में तुम फूले ही जाते हो ॥
जो भूल रहे उसको फिर को उद्धार करना ।
सुबह शाम लेके माला मन में पुकार करना ॥
एक रोज तुम्हें होना प्रभू पास है रवाना ।
मीरा यह कहती मनुष्यो हरि के गुण गान करना ॥
भगवान की मुहब्बत पर तन मन निसार करना ।
सुबह शाम लेके माला मन में पुकार करना ॥

भजन ९

पद घुंघरू बाँध मीरा नाची रे पद घुंघरू । सास कहे मीरा भई बावरी, लोग कहें कुलनासी ॥ पद घुँघरू० ॥ सात कोठे अन्दर एक कोठरी, मीरा बन्द कर राखी रे ॥ पद घुँघरू० ॥ देखत ही मीरा पीर गिरधर खुद आ दर्शन दिखाये

री ॥ पद घुँघरू० ॥ सुनत ही बात मीरा की राणा जल्दी से उठ धाये री ॥ पद घुँघरू० । खोलत ही ताला कोठे का श्याम की मुरली पाई री ॥ पद घुँघरू० ॥ फिर कोठे अन्दर बन्द कर मीरा को भोजन बन्द कराये री ॥ पद घुँघरू० ॥ देखत ही पीर मीरा की श्याम ने छत्तीस व्यञ्जन मंगाये री ॥ पद घुँघरू० ॥ एक ही पत्तल पै बैठ मीरा श्याम ने भोग लगाये री ॥ पद घुँघरू० ॥ फिर बातें सुन करके राणा ने खोल ताले देखन लागे री ॥ पद घुँघरू० ॥ खोल के ताले देखे राणा ने झूटे पत्ते पाये री ॥ पद घुँघरू० ॥ मीरा के प्रभू गिरधर नागर भक्तों के मान बढ़ाये री ॥ पद घुँघरू, पद घुँघरू बाँध मीरा नाची रे, पद घुँघरू ॥

भजन १०

दौड़ आता है सुनके पुकार है, ऐसा मेरा समलिया उदार है। कभी मुरली सुरीली बजाता है वो कभी गोरस की गंगा बहाता है, वो कभी करता

निशाचर संहार है ॥ ऐसा मेरा० ॥ कौसल्या के बने नैन का तारा, कही मां यशोदा का है प्राण प्यारा, कहीं सूर तुलसी का जीवन आधार है ॥ ऐसा मेरा० ॥ कहीं प्यारी सिया के लिए रण करें। कहीं गोपी गणाओं के मन को हरें कहीं छैला सा करता सिंगार है ॥ ऐसा मेरा० ॥ मान राधा का मोहन हाय रखते कहीं, हो गोबर-धन गोरस भोग चखते कहीं, लेते ब्रज की धारा को उपार है ॥ ऐसा मेरा० ॥ साग खाने विदुर द्वार पर जा अड़े, बेर भीलिनी के झूठे हाय खाया करे, स्वयं करते अधम का उद्धार है ॥ ऐसा मेरा० ॥ धर्म का लोप दुर्जन का दल जब करे, सज्जनों को सता पाप घट जब भरे, तभी होते रसिक साकार है ॥ ऐसा मेरा० ॥ कहीं मीरा के प्राणों के प्यारे बने, कहीं बिस से बो अमृत जाय करे, चूर करते राणा का अभिमान है ॥ ऐसा मेरा समलिया उदार है ॥

भजन ११

राणा जी मैं तो अब न रहूँगी तेरे बस की। मायका भी छोड़ा मैंने सुसरा भी छोड़ा, छोड़ी लाज घूंघट की ॥ राणा जी० ॥ हार सिंगार सभी कुछ छोड़ा, छोड़ी चूड़ी हाथों की ॥ राणा जी० ॥ जहर का प्याला राणा जी ने भेजा, प्याली भई अमरत की ॥ राणा जी० ॥ साधू संत संग करूँ कीर्तन छबी निरख मोहन की ॥ राणा जी० ॥ मीरा के प्रभू गिरधर नागर चरण कमल बलिहारी ॥ राणा जी मैं तो अब न रहूँगी तेरे बस की ॥

भजन १२

मीरा कह रही ढोल बजाय गिरधर मेरा है। सांप पिटारा राणा जी ने भेजा खोलत भये सालिगराम। गिरधर मेरा ॥ मीरा० ॥ जहर का प्याला राणा जी ने भेजा, पीवत अमरत होय, गिरधर मेरा है ॥ मीरा० ॥ सूलों की सेज राणा जी ने भेजी, सोबत फूलन होय। गिरधर मेरा

है ॥ मीरा० ॥ मीरा के प्रभू गिरधर नागर चरण कमल बलिहार, गिरधर मेरा है ॥ मीरा कह रही ढोल बजाय गिरधर मेरा है ॥

भजन १३

मोय माधो घनश्याम बुलाय गयो री। दिन नहीं चैन पलक नहीं निंदियां सोते में दरस दिखाय गयो री ॥ मोय माधो० ॥ सोवत ही मैं रंग महल में थोरीसी झलक दिखाय गयो री ॥ मोय माधो० ॥ गोकुल ढूंढू मथुरा ढूंढू मोय वृन्दाबन में पाय गयो री ॥ मोय माधो० ॥ बिरह की मारी मीरा बन बन डोली, बन में रस भरी बंसी सुनाय गयो री ॥ मोय माधो० ॥ मीरा के प्रभू गिरधर नागर हँस हँस कण्ठ लगाय गयो री ॥ मोय माधो घनश्याम जगाय गयो री ॥

भजन १४

कोई कहियो रे प्रभु आवन की।
आवन की मन भावन की ॥
आप न आवे लिख नहिं भेजे,
बान पड़ी ललचावन की ॥

अखियां दोऊ कह्यौ नहिं मानें,
नदिया बहै जैसे सावन की ॥
कहा करूँ कुछ बस नहिं मेरो,
पङ्ख नहीं उड़जावन की ॥
मीरा कहे प्रभु कब्ब रे मिलोगे,
चेरी भई तेरे दामन की ॥

भजन १५

बसो मोरे नैनन में नँदलाल ।
मोहिनी मूरत सांवरी सूरत नैना बने विशाल ।
अधर सुधारस मुरली राजै, उर बैजन्ती माल ॥
छुद्र घण्टिका कटितट शोभित, नूपुर शब्द रसाल ।
मीरा के प्रभु सन्तन सुखदाई, भगतवछलगोपाल ॥

भजन १६

पग घुंघरू बांधि मीरा नाची रे ।
मैं तो मेरे नारायण की आपहि होगई दासी रे ।
लोग कहैं मीरा भई बाबरी जगत कहै कुलनासी ॥
विषकाप्याला राणाजी भेजा पीवत मीराहाँसीरे ।
मीराकेप्रभु गिरधरनागर सहज मिलेअविनासीरे ॥

भजन १७

दरश बिन दूखन लागे नैन ।
जब से तुम बिछुड़े प्रभु मोरे कबहुँ न पायौ चैन ॥
शब्द सुनत मेरी छतियां कांपै मीठे लागैं बैन ।
बिरह कथा का सूं कहूँ सजनी बह्गई करवत ऐन ॥
कल न परत पल हरि मग जोवत भई छमासी रैन ।
मीरा के प्रभु कबरे मिलोगे दुख मेटण सुख दैन ॥

भजन १८

मीरा मगन भई हरि गुण गाय ।
साँप पिटारा राणा ने भेज्या ।
मीरा हाथ दिया जाय ॥
न्हाइ धोइ सब खोलन लागी ।
सालिग राम गई पाय ॥
जहर का प्याला राणा ने भेज्या ।
अमृत दिया बनाय ॥
न्हाइ धोइ जब पीवन लागी ।
हो गई अमर अचाय ॥
सूली सेज राणा ने भेजी ।

दीजो मीरा सुवाय ॥
साँझ भई मीरा सोवण लागी।
मानो फूल बिछाय ॥
मीरा के प्रभु सदा सहाई।
राखे बिघन हटाय ॥

भजन १९

मेरे तो गिरधर गुपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकट मेरो पति सोई ॥
तात मात भ्रात बन्धु आपनो न कोई।
छाँड़ि दई कुल की लाज कहा करै कोई ॥
संतन ढिग बैठि बैठि लोक लाज खोई।
चुनरी के किये टूंक ओढ़ लई लोई ॥
मोती मूँगे उतार बन माला पोई।
अँसुअन जल सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई ॥
अब तो बेलि फैल गई आनन्दफल होई।
दूध की मथनियाँ प्रेम से बिलोई ॥
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पियो कोई।
भगति देखि राजी हुई जगत देखि रोई ॥
दासी मीरा लाल गिरधर तारो अब मोई।

भजन २०

मैं गिरधर के घर जाऊँ ।
गिरधर म्हारो प्रीतम साँचो, देखत रूप लुभाऊँ ॥
रैण पड़े तब ही उठि जाऊं, भोर भये उठि आऊं ॥
रैण दिना वाके संग खेलूं, ज्यों त्यों ताहि रिझाऊं ।
जो पहिरावे सोई पहिरूं. जो दे सोई खाऊं ॥
मेरी उणकी प्रीति पुराणी, उन बिन पल न रहाऊं ।
जहाँ बिठावे तंह ही बैठूं, बेचै तो बिक जाऊं ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊं ।

भजन २१

श्याम मने चाकर राखौ जी ।
गिरधारी लाल चाकर राखौ जी ।।
चाकर रहसूं बाग लगासूं नित उठ दर्शन पासूं ।
बृन्दाबन की कुञ्ज गलिन में तेरी लीला गासूं ॥
चाकरी में दर्शन पाऊं सुमरिन पाऊं खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊं तीनों बाताँ सरसी ॥
मोरमुकुट पीताम्बर सोहै गल बैजन्ती माला ।
बृन्दाबन में धेनु चरावे मोहन मुरली वाला ॥

हरे हरे नित बाग लगाऊं बिच २ राखूं क्यारी।
सांवरिया के दर्शन पाऊं पहिर कसूमी सारी॥
जोगी आया जोग करण को तप करने सन्यासी।
हरी भजन को साधू आये बृन्दाबन के बासी॥
मीरा के प्रभु गहर गंभीरा सदाँ रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दर्शन दीजे प्रेम नदी के तीरा॥

भजन २२

हरी मेरे जीवन प्राण अधार।
और आसरो नहीं तुम बिना।
तीनों लोक मंझार॥
आप बिना मोहे कछु न सुहावे।
निरख्यौ सब संसार॥
मीरा कहै मैं दासी रावरी।
दीज्यो मती बिसार।
तोसों लाग्यौ नेह रे प्यारे।
नागर नन्द कुमार॥
मुरली तेरी मन हर्‌यो।
बिसर्‌यौ घर ब्यौहार॥

जब ते श्रवणन धुनि परी।
घर आँगन न सुहाय ॥
पारधि ज्यों चूकै नहीं।
मृगी बेधि दई आय ॥
पानी पीर न जानई ज्यों।
मीन तड़फि मरि जाय ॥
रसिक मधुप के मरम को नहीं।
समुझत कमल लुभाय ॥
दीपक को जो दया नहीं
उड़ि उड़ि मरत पतङ्ग ॥
मीरा प्रभु गिरधर मिले।
जैसे पानी मिल्यौ रंग ॥

भजन २३

चलौ मन गंगा जमना तीर।
गंगा जमना निरमल पाणी, शीतल होत शरीर।
बंशी बजावत गावत कान्हो, संग लियो बलवीर ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, कुण्डल झलकत हीर।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पै सीर ॥
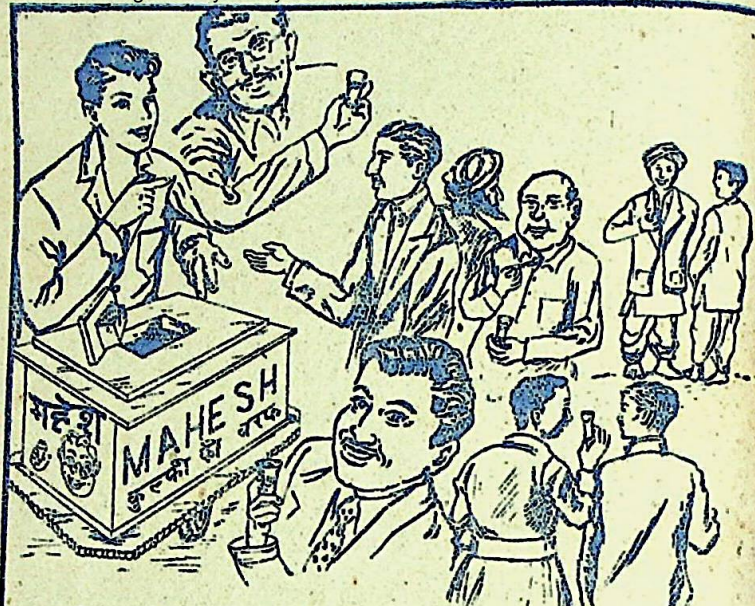
पूर्ण मलाईदार दूध गन्ने की शुद्ध शक्कर व ताजा दूध की क्रीम ये हैं वे पोषक पदार्थ जिनके संमिश्रण से **महेश** की हर कुल्फी स्वादिष्ट स्वं शक्तिदाई तत्वों से भरपूर रहती हैं।

आप शक्ति तथा स्फूर्ति के लिए इन अत्यधिक स्वादिष्ट कुल्फियों का आनन्द ले सकते हैं।

मिट्टी की कुल्फी में बढ़िया आइसक्रीम बनाने वाले

महेश आइसक्रीम फैक्ट्री

रावतपाड़ा, आगरा

नोट :- विवाह शादियों व उत्सवों पर खास कंशेसन से सप्लाई करते हैं

जनकपुर जौनार

(ले० ला० सुन्दरलाल वैश्य)

मा
जन्म
छाई खुशी
बडे दिनन स
घडी है
त्य सप्सरा
भ से देव फूल
मुबारिक

प्रकाशक—

पुस्तकालय, मथुरा।

पकी
शा की
रहती है।
स्वादिष्ट
है।
बनाने वाले
सफ़ाई करते हैं

श्री गणेशायनमः

जनकपुर ज्यौनार।

तर्ज गारी [नं० १] श्रीरामचन्द्रजी का जन्म।

जन्मे दशरथ घर लाल, चलो देखे सजनी ॥
भारी भीर लगी द्वारे पै, होय मंगलाचार।
जन्मे पुत्र श्री दशरथ के, हैं हरि के औतार।
सुनी वेदन सजनी ॥ १ जन्मे०
छाई खुशी अवधनगरी में, दान देंय महाराज।
बड़े दिनन से दशरथ के जन्मे हैं सुत आज ॥
घड़ी है शुभ सजनी ॥ २ ॥ जन्मे०
नृत्य अप्सरा करें भवन में, सुर गढ चढे बिमान
नभ से देव फूल बरसावें, बाजै ढोल निशान ॥
मुबारिक हो सजनी ॥ ३ ॥ जन्मे०

दिन२खेलें राज भवन में, करें चरित्र बाल। रुनुकझुनुक बाजै पैजनियां,कहैं कबि सुंदरलाल राम छबि भल सजनी ॥४॥ जन्मे०

[नं० २] यज्ञ रच्छा गारी।

आये कौशिक संग दोउ भाय रखावन मख सजनी।बन में खल बल असुरन कीना मुनि-यन कीनो तंग। दुखी भये कौशिक अवधाईं गये राम लषन लाये संग। रचायो यज्ञमुनी ॥१॥ आये०। लै दल हैं राक्षस सब आये, राम चलाये बाण। सहित सुबाहु और मुनि दल,लीनों सब के प्राण॥ दुष्ट ताडिका हनी ॥२॥ आये०। इन्हीं नारि अहिल्या तारी, चरण कमल परसाय। आये देखन यज्ञ जनक पुर,राम लषण दोउ भाय। पुरी आनंद घनी ॥ ३ ॥आये०। इन को रूप देखि के आली, मन में उठे तरंग। मैं चलि जाऊं राम संगमें,

तुम लक्षमण के संग ॥ सुन्दर कबि छवि बरनी ॥ ४ ॥ आये० ।

[नं० ३] धनुष यज्ञ भंग की ।

भयो धनुष शम्भुको भंग, सुबारिक हो आली ।
सुमनबाटिका गई सियाजी, मिलेतहां प्रभु आय
नारद बचन सखी सांचभये, जोडी दईमिलाय ।
महूरत शुभ आली ॥ १ ॥ भयो० ।
सीता उझकेंउन खिरकिनसे, लखि२ धनुषकठौर।
देखि प्रेम रघुपति सीताको, झपटे धन्वाओर ।
तानि लौ धनु आली ॥ २ ॥ भयो०
आये परशुरामतेहि अवसर, क्षणाकरो सम्बाद।
हरि मानिवे हूंबन गवने, रामहि दै धन्यवाद ॥
बधाई है आली ॥ ३ ॥ भये ।
खबरिपठाई नगरअयोध्या, जनक ममहि हर्षाय ।
आवत होय बरात रामकी, सुनो सखी चितलाय।
सुन्दर कवि कहैं आली ॥ ४ ॥ भयो० ।

[नं० ४] अयोध्या में कौशिल्या सुमित्रा केकई का बन्दरा।

ब्याहन बरनी को जाय. मेरो हरियालो रे बन्ना। गये लला बन यज्ञ रचाओ मारि ताडिका नारि। मुनिको यज्ञ कराओ पूरो मारे निश्चर झारि॥ करो मख पूरोरे बन्ना ॥१॥ ब्याहन देखो अहिल्या नारि ललाने, सरगै दई पठाय। जाय जनकपुर लखा बगीचा कौशिक सङ्ग हरषाय। धन्य प्रभु मेरोरे बन्ना ॥२॥ ब्याहन मान घटाये महराजन के तेरो शिवको शाप। धन्य भाग हमरे हैं सजनी जिन कुच्छा भये आप॥ सर्व गुणधारी रे बन्ना॥३॥ ब्याहन० परशुरामको मान घटायौ, धन्य हमारे लाल। ऐसे गावें नारि अवधकी कहें कवि सुंदरलाल। मनोहर जोड़ी रे बन्ना ॥ ४ ॥ ब्याहन०

[नं० ५] आगवनी गारी लै बरात दशरथ का जनकपुर पहुँचना

गई जनक नगर बरात उमडि आये नरनारी गज चिंहार घोड़ा हीसे, बाजे ढोल निशान।

रथ स्यदन दौरे फट फट पै. सुर गगा चढे बिमान ॥ लख शोभा भारी ॥१॥ गई जनक खबरि सुनी जा जनकराय ने, आपगई बारात सजें जनक अगवानी कारन ले संग बंधु व तात ॥ करी है तैयारी ॥ २ ॥ गई जनक० जो जो सुनै दौरिके आवें, देख पुरके लोग। धन्य भाग है जनकराय के, धन्य मिलै संयोग॥ कहैं सब नरनारी ॥ ३ ॥ गई जनक० ॥ राम जुहारकरी मिथिलापति जनवासा बतलाय। ठहर बरात गई दशरथ की, कहैं सुन्दर कवि-राय ॥ करी द्वारे तैयारी ॥ २ ॥ गई जनक०

[नं० ६] दरवाजे की गारी।

चलो द्वारे देंय कराय, सजन द्वारे आये सजनी ॥ झुण्ड २ मिलिके नारिन के दरवाजे गये जाय। अनंद बधाई द्वारे होव छज्जन कामिन छाय ॥ चौक द्विज पूरें ॥ १ ॥ चलौ० ॥ जितने घरवारे दशरथ के द्वारे पहुँच आय। मौर बँधौ रघुपति के सिर पै,

शोभा बरनी न जाय ॥ कहत छवि नहिं बरनी ॥२॥ चलौं०॥ धन्य भाग हम तुमके आली, प्रभू जो आये द्वार ॥ द्वारो करवायो विदेह नैं गावो मंगलचार ॥ सुन्दर कवि कहैं सजनी ॥ ६ ॥ चलौं० ॥

[नं० ७] परछन की गारी।

सजन। परछन करि लेउं राम ब्याहन आये। कैसो रूप बनौ दूलहा को, सो सजनी सुनि लेउ। मौर सुहाबे राम शीश पै, हीरा जड़े लखि लेउ ॥ अधिक आनन्द छाये ॥ १ ॥ सजनी० ॥ कानन कुण्डल आली झलकैं श्याम रूप सुकुमार ॥ आली राम मनोहर नैना, हिरना की उनहार। धन्य बर सिय पाये ॥ २ ॥ सजनी० ॥ तिलक लिलार सुहावै हरि के, मुख बिच बिजली भाय। सुचि सुन्दर सूरति इन प्रभु की दर्शन दीने आय। कहत छवि नहिं आये ॥३॥ सजनी०

दूल्हा दुलहिन रात सियाकी भली दिखाय।
कवि सुन्दर ने परछ निगाई सजनी भली सुहाय।
सुदिन विधि दिखलाये ॥४॥ सजनी० ।

[नं० ८] पान सुपडियन की गारी ।

चलौ जनवासे के बीच सुपडियां दे आवैं ।
इन्द्राणी ब्रह्माणी आई धर तिरियन को रूप ।
गौरा और सरस्वती धाई सीता मात अनूप ॥
सकल तिय जुरि जामें ॥ १ ॥ चलौ०
सबतिरिया जुरि मिलके धाई,जहां अवध बरात
गारी देवें दशरथ जीको देउ सुपडिया तात ॥
भली तुम्हारी जामें ॥ २ ॥ चलौ०
जनकपुरीकी सिगरी, तिरियागारीरहीं सुनाय।
भरत शत्रुहन लषन हंसतहैं,राम रहेमुसक्याय॥
गुरू जी हरषामें ॥ ३ ॥ चलौ०
नेगजोग तिरियनते कीनौ,असकहिं चली पराय
भौरिन वेरा सजन तुम्हारी, दीहे कुगति कराय
सुन्दर कवि बतलामें ॥ ४ ॥ चलौ०

[नं० ९] माँग चढ़ायो गारी ।

मेरी अद्भुत बन्नी हेत चढ़ावा ऐसो लैयो ।
बैनी शीश फूल को लइयौ । बुन्दा ठप्पे दार ।
करन फूल झूमका औ कठिया, तिलक सितारदार
बाँह जोशन लइया ॥ १ ॥ मेरी० ॥
इलरी तिलरी और सतलरी, एक नौलखा हार ।
जा हमेल धुकधुकी गुलीबंद कंठ श्री छविदार॥
जवाहर जड़वइयो ॥ २ ॥ मेरी० ॥
टडिया बाजूबंद अनंता, अगिल्ला पिछलियाँ लाय।
नवग्रही पहुँची औखडुआ, कड़ेछड़े छविदार ॥
छैल चूडी लइयो ॥ ३ ॥ मेरी० ॥
साडी और चढयो लइयो। छला मुंदरिया लाल।
बहुतक धन लै मइये नीचे। ऐओ जौहरीलाल ॥
कभी ना करिएऔ ॥ ४ ॥ मेरी० ॥

[नं० १०] भाँमर गारी ।

सियाराम की भांमरि होय सोगारी सब सजनीं

पहिली भांमरिके परते खन, दीने राग उचार।
माता इनकी रावण लेगयौ, कौशिल्याहै छिनार॥
सुनी हमने सजनी ॥ १ ॥ सियाराम ॥
सारी भांमरि और तीसर चौथी दीनी डारि।
भाँमरि पंचई और छटीलै, बेटी बापहा क्यार॥
सतई पर घर सजनी ॥२॥ सिया० ॥
बेटी तीन जनक भाईकी लई जनक बुलवाय।
भरत शत्रुहन और लषनकी भाँमरि दई डराय॥
करो मङ्गल सजनी ॥३॥ सिया०॥
गारी देवें दशरथजीको. जनकपुरी की नारि।
कवि 'सुन्दर' ने कही भांमरें, हाय मंगलाचार॥
मनोहर जोड़ी सजनी ॥४॥ सियाराम०

[नं० ११] गारी।

गये जेंमन हित ज्यौनार, जनक नृपके अँगना।
राम लषन अरु भरत शत्रुहन, अवधपुरी भूपाल
गुरु वशिष्ठ औ कौशिक बैठे, जेंमन हित तत्काल

बराती बैठे अँगना ॥१॥ गये० ॥
पातरि परसिके दौनापरसे लोटा और गिलास।
पूरी कचौरी दही परसके, धरौ अचार सुपास॥
बहुत आनन्द माना ॥२॥ गये० ॥
सेब इमरती बालूसाही, गुजिया नुकती दार ।
मधु मेवा पकमानमिठाई,व्यंजन परस समार॥
बरणी नाहिं जावैं उपमा ॥३॥ गये०
जब जौनारि परसिगई सिगरी,हौंय मंगलाचार।
कवि सुन्दर जौनार बनाई तिरियन हेत समार॥
जनक अति खुश मन माँ ॥ गये० ॥

[नं० १२] राम रूठने की गारी ।

रूठे रामहिं रही मनाय जनकपुर की सखियां
काहे लला फेरि मुंह बैठे धरो अगारी थाल।
छतिस व्यंजन धरे अगारू हो छिनारके लाल॥
नुकीला है अंखियां ॥ १ ॥ रूठे० ॥

हाथी घोड़ा जोतुम चाहो, अपनी मां के काज ।
बहिन तुम्हारीके प्रभुकारन, मंगवायो इक बाज
कहै चातुर सखियां ॥ ३ ॥ रूठे० ॥
धन दौलततुमको मंगवाय, तुम ऊंट देंयबंधाय।
महल भवन जोमेरौ चाहो, सो लेजाउ उठाय॥
करें हँसि हंसि बतियां ॥३॥ रूठे० ॥
रानी आई जनकराय की, दये जवाहर लाल।
हंसिके प्रभुजी जेंमनलावो, कहैकबि सुन्दरलाल
करें हरि जग बतियां ॥४॥ रूठे०॥

[नं० १४] राम जेमन की गारी ।

अबकरें रामज्यौनार, सो गारीगाओ प्रेमभरी।
तीन पनेतक तुम्हरे दादा, रहे हीजड़ा राम॥
चौथे पनमें खीर खायके, गर्भित हुयगई बाम ।
छिनारिया अति बिगरी ॥१॥ अब० ॥
कौशिल्या, केकई, सुमित्रा, तीनों सखी छिनार।
जे बियान दशरथ नृपआली, तैसी उनकी नार
लषन से हैं झिगरी ॥३॥ अब० ॥

मातातुम्हरी रावण हरिलाई,लाये दशरथब्याहि
तीनदिना रावणने राखी,जे कौशिल्या आहि।
केकई अति उजरी ॥३॥ अब० ॥
सुनो शत्रुहन भरत पियारे तुमगति कहीन जाय
अबनहिं तुमको गारी दीहै.कहैं सुंदर कविराय।
खूब जेमों रबड़ी ॥४॥ अब० ॥

[नं० १५] गारी।

बिना गर्भभये सुत चारि.सखी नई बात सुनी।
लाये संग बरात घनेरी. सुर नर मुनि ले संग।
हित सम्बन्धी सब ही लाये ना लाये वे संग॥
बहिन बूआ जननी ॥ १ ॥ बिन० ॥
कौशिल्या केकई सुमित्रा जुबनभरी जे नारि।
निपट निकाम नृपनि उपजाये एकसंग सुतचारि
यही अचरज सजनी ॥ २ ॥ बिन० ॥
मुनिकी कृपा चारिसुत जाये. ऐसी इनकी माय
सो राम लषण तुम उत्तरदीजो जासेशंक जाय
भानु कुल मुकट मनी ॥३॥ बिन० ॥
सुरनारी पुरनारिनमें मिल शोभालख सम्हारि

रम्भाउमा रमाइन्द्रानी सुन्दर कवि बलिहार॥
देख सिया राम धनी ॥४॥ बन० ॥

[नं० १५] ज्यौनार उठने पर।

बचइयौं लागो देश उजारो जाय।
दशरथराजा ब्याहनआये कुमर संगले चारि।
चारौ बिटियां घरकी लीनी खाइलई ज्यौनार
लये जे सब घर जाँय ॥१॥ बचइयौ० ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई खाई खूब अघाय।
बहुतक खर्च कराओइनने नगरी लई लुटाय॥
बाँधकर लये कचौरा जाय ॥२॥बचइयौ.
बहुतकधनछकडनभरिलीनों.जेछिनारके लाल
चारौ सुता लिये जेजामें,देश करो कंगाल॥
पकरियौ कहू भागि ना जाय ॥३॥ बचइयौ०
करें मसखरी लक्षमण हमसे.मेरी सौतिके लाल
बार२ जेछेड़ें भारत. कहैकवि 'सुन्दरलाल'॥
मसखरी सजनी नाहिं सुहाय ॥४॥ बचइयौ०

[नं० १६] गारी]

सब ककना रही खुलाय जनकपुर. की नारी॥

खोलत राम सियाको कंकना करींगांठि दिखाय
तबदे तारी सखियां बोलैं धन्य लला रघुराय
टेरौ कौशिल्या महतारी ॥ १ ॥ सब० ॥
जहु कंकनाना धनुषशम्भूको नाहिंताडकानारि
जहुकंकना नापरशुरामहै नाहि अहिल्यानारि
न भस्मासुर भारी ॥ २ ॥ सब० ॥
नाजहु कंकनाहै हिरनाकुश नाहीं बलिनृपराय
नाजहु कंकना हिरण्याक्षहै नाहिं शंखासुरभाय
दयौ पल में मारी ॥ ३ ॥ सब० ॥
नाजहु कंकना क्षीर लड़ाई भये मोहिनी राय।
नाजहू कंकनाहै सीताको कहें सुन्दर कबिराम
छिनारिया महतारी ॥ ४ ॥ सब० ॥
सब मिलके खुलामेंगूथ जनकपुरकी रमनी।
आवो दुलारे दशरथजी के खोले मडपै गूथ॥
रामलषनऔर भरत शत्रुहन करिऔजोरअकूत
पिलाओ पय केतौ जननी ॥ १ ॥ सब० ॥
जेनाहिं गूथ सियाको कंकना नाहीं मुनीकोयज्ञ

नाहीं जहु मारीच निशाचर फेंको तुम नीतज्ञ।
छिनरिया सुत सजनी ॥ २ ॥ सब० ॥
नाहीं लाला जलंधरनारी करौ कपट वासाथ।
तुम छलबलिया होनाराण तुम्हरो पतियार ॥
भली नाहिं तुम करनी ॥ ३ ॥ सब० ॥
गूथ खुलैना भरत लाला पै केकई लेउ बुलाय।
कोमल अङ्ग शत्रुहन कैसे उनको देउ हटाय॥
लषणा को क्रोध घनी ॥ ४ ॥ सब० ॥
मात सुमित्राको बुलवाओ जिनके कटीले नैन
राह चलतन घायलकीने सुन्दर कविको बैन॥
अजोध्या अजब बनी ॥ ५ ॥ सब० ॥

[नं० १८] गारी।

महलाया सुथरी हो सुमित्रा अजब बनी ॥
जनकपुरी की सखिया पुनी राम सुख दैंन।
तुमतौ लये लालिकोन जाबौ कहौ मातसे बैन
कही हमसे जननी ॥२॥ महलायच० ॥

हमतौ अपनी बेटी ब्याहीं तुम हूं दीयौ ब्याही
हमरे सुत तुम्हारे बहनोंई हुय जैहैं रघुराय ॥
तबही मनकी करनी ॥ २ ॥ महलायक०
हमारी सौत होय कौशिल्या, मेरे पति घर आय
तादिन घीकेदीपक वारौं, मेरे मनकी हुयजाय
केकई अजब बनी ॥ ३ ॥ महलायक०
बिदा करन लागे मिथिलापति दीनोदान दहेज।
कहैं सुन्दर कवि चले अवधको श्रीदशरथ अव-
ध अयोध्या अजब ध्वनी ॥ ४ ॥ महलायक०

मुद्रक—पं० पुरुषोत्तमदास मुरलीधर शर्मा, हरीहर इलेक्ट्रिक प्रेस, मथुरा

ओ३म्
जनकपुरज्यौनार
प्रकाशकः—
हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा।

श्री गणेशायनमः

जनकपुर ज्यौनार।

तर्ज गारी [नं० १] श्रीरामचन्द्रजी का जन्म।

जन्मे दशरथ घर लाल, चलो देखे सजनी ॥
भारी भीर लगी द्वारे पै, होय मंगलाचार।
जन्मे पुत्र श्री दशरथ के, हैं हरि के औतार।
सुनी वेदन सजनी ॥ १ जन्मे०
छाई खुशी अवधनगरी में, दान देंय महाराज।
बडे दिनन से दशरथ के जन्मे हैं सुत आज ॥
घडी है शुभ सजनी ॥ २ ॥ जन्मे०
नृत्य सप्सरा करें भवन में, सुर गढ चढे बिमान
नभ से देव फूल बरसावें, बाजै ढौल निशान ॥
मुबारिक हो सजनी ॥ ३ ॥ जन्मे०

दिन२खेलें राज भवन में, करें चरित्र बाल। रुनुकझुनुक बाजै पैजनियां,कहें कबि सुंदरलाल राम छबि भल सजनी ॥४॥ जन्मे०

[नं० २] यज्ञ रक्षा गारी।

आये कौशिक संग दोउ भाय रखावन मख सजनी।बन में खल बल असुरन कीना मुनि-यन कीनो तंग । दुखी भये कौशिक अवधाहिं गये राम लषन लाये संग।रचायो यज्ञमुनी ॥१॥ आये० । लै दल हैं राक्षस सब आये, राम चलाये बाण।सहित सुबाहु और मुनि दल,लीनों सब के प्राण॥ दुष्ट ताडिका हनी ॥२॥ आये० । इन्हीं नारि अहिल्या तारी, चरण कमल परसाय। आये देखन यज्ञ जनक पुर,राम लषण दोउ भाय। पुरी आनंद घनी ॥ ३ ॥आये० । इन को रूप देखि के आली, मन में उठे तरंग। मैं चलि जाऊं राम संगमें,

तुम लक्षमण के संग ॥ सुन्दर कबि छवि बरनी ॥ ४ ॥ आये० ।

[नं० ३] धनुष यज्ञ भंग की ।

भयो धनुष शम्भुको भंग, मुबारिक हो आली ।
सुमन बाटिका गई सियाजी, मिले तहां प्रभु आय
नारद बचन सखी सांच भये, जोडी दई मिलाय ।
महूरत शुभ आली ॥ १ ॥ भयो० ।
सीता उझकै उन खिरकिन से, लखि २ धनुष कठौर ।
देखि प्रेम रघुपति सीता को, झपटे धन्वा और ।
तानि लौ धनु आली ॥ २ ॥ भयो०
आये परशुराम तेहि अवसर, ऋषण करो सम्बाद ।
हरि मानि वे हूं बन गवने, रामहि दै धन्यवाद ॥
बधाई है आली ॥ ३ ॥ भये ।
खबरि पठाई नगर अयोध्या, जनक मनहि हर्षाय ।
आबत ... [illegible] त रामकी, सुनो सखी चितलाय ।
सुन्दर कवि कहैं आली ॥ ४ ॥ भयो० ।

[नं० ४] अयोध्या में कौशिल्या सुमित्रा केकई का बन्दरा।

ब्याहन बरनी को जाय. मेरो हरियालो रे बन्ना। गये लला बन यज्ञ रचाओ मारि ताडिका नारि। मुनिको यज्ञ कराओ पूरो मारे निश्चर झारि॥ करो मख पूरोरे बन्ना ॥१॥ ब्याहन देखो अहिल्या नारि लालाने, सरगै दई पठाय। जाय जनकपुर लखा बगीचा कौशिक सङ्ग हरषाय। धन्य प्रभु मेरोरे बन्ना ॥२॥ब्याह० मान घटाये महराजन के तेरो शिवको शाप। धन्य भाग हमरे हैं सजनी जिन कुच्छा भये आप॥ सर्व गुणधारी रे बन्ना॥३॥ ब्याहन० परशुरामको मान घटायौ, धन्य हमारे लाला। ऐसे गावें नारि अवधकी कहें कवि सुदरलाल। मनोहर जोड़ी रे बन्ना ॥ ४ ॥ ब्याहन०

[नं० ५] आगवनी गारी लै बरात दशरथ का जनकपुर पहुँचना

गई जनक नगर बरात उमडि आये नरनारी गज चिंहार घोड़ा हींसे, बाजे ढोल नेशान।

दूल्हा दुलहिन रात सियाकी भली दिखाय।
कवि सुन्दर ने परछ निगाई सजनी भली सुहाय।
सुदिन बिधि दिखलाये ॥४॥ सजनी० ।

[नं० ८] पान सुपडियन की गारी ।

चलौ जनवासे के बीच सुपडियां दे आवैं ।
इन्द्राणी ब्रह्माणी आई धर तिरियन को रूप ।
गौरा और सरस्वती धाई सीता मात अनूप ॥
सकल तिय जुरि जामें ॥ १ ॥ चलौ०
सबतिरिया जुरि मिलके धाई,जहां अवध बरात
गारी देवें दशरथ जीको देउ सुपडिया तात ॥
भली तुम्हारी जामें ॥ २ ॥ चलौ०
जनकपुरीकी सिगरी, तिरियागारीरहीं सुनाय।
भरत शत्रुहन लषन हंसतहैं,राम रहे मुसक्याय॥
गुरू जी हरषामें ॥ ३ ॥ चलौ०
नेगजोग तिरियनते कीनौ,असकहिं चली पराय
भौरिन वेरा सजन तुम्हारी, दीहे कुगति कराय
सुन्दर कवि बतलामें ॥ ४ ॥ चलौ०

[नं० ६] माँग चढ़ायो गारी ।

मेरी अद्‌भुत बन्नी हेत चढ़ावा ऐसो लैयो ।
बैनी शीश फूल को लइयौ। बुन्दा ठप्पे दार।
करन फूल झूमका औ कठिया, तिलक सितारेदार
बाँह जोशन लइयो ॥ १ ॥ मेरी० ॥
हलरी तिलरी और सतलरी, एक नौलखा हार ।
जा हमेल धुकधुकी गुलीबँद कंठ श्री छबिदार॥
जवाहर जड़बइयो ॥ २ ॥ मेरी० ॥
गड़िया बाजूबंद अनंता, अगिला पिछालियाँ ल[illegible]
नबग्रही पहुँची औखडुआ, कड़ेछड़े छबिदार॥
छैल चूडी लइयो ॥ ३ ॥ मेरी० ॥
साडी और चढयो लइयो। छला मुदरिया लाल।
बहुतक धनलैं मइये नीचे। ऐओ जौहरीलाल ॥
कमी ना करिएऔ ॥ ४ ॥ मेरी० ॥

[नं० १०] भाँमर गारी ।

सियाराम की भांमरि होय सोगारी सब सजनीं

पहिली भांमरिके परते खन, दीने राग उचार।
माता इनकी रावण लेगयौ, कौशिल्याहै छिनार॥
सुनी हमने सजनी ॥ १ ॥ सियाराम ॥
सारी भांमरि और तीसर चौथी दीनी डारि।
भाँमरि पंचई और छटीलौ, बेटी बापहा क्यार॥
सतई पर घर सजनी ॥ २ ॥ सिया० ॥
बेटी तीन जनक भाईकी, लई जनक बुलवाय।
भरत शत्रुहन और लषनकी भाँमरि दई डराय॥
करो मङ्गल सजनी ॥ ३ ॥ सिया० ॥
गारी देवें दशरथजीको. जनकपुरी की नारि।
कबि 'सुन्दर' ने कही भाँमरें, हाय मंगलाचार॥
मनोहर जोड़ी सजनी ॥ ४ ॥ सियाराम०

[नं० ११] गारी।

गये जेंमन हित ज्यौनार, जनक नृपके अँगना।
राम लषन अरु भरत शत्रुहन, अवधपुरी भूपाळ
गुरु वशिष्ठ औ कौशिक बैठे, जेंमन हित तत्काल

बराती बैठे अँगना ॥१॥ गये० ॥
पातरि परसिके दौनापरसे लोटा और गिलास।
पूरी कचौरी दही परसके, धरौ अचार सुपास॥
बहुत आनन्द माना ॥२॥ गये० ॥
सेब इमरती बालूसाही, गुजिया नुकती दार ।
मधु मेवा पकमानमिठाई, व्यंजन परस समार॥
बरणी नाहिं जावैं उपमा ॥३॥ गये०
जब जौनारि परसिगई सिगरी, हौंय मंगला[illegible]र।
कबि सुन्दर जौनार बनाई तिरियन हेत समार॥
जनक अति खुश मन माँ ॥ गये० ॥

[नं० १२] राम रूठने की गारी ।

रूठे रामहिं रही मनाय जनकपुर की सखियां
काहे लला फेरि मुंह बैठे धरो अगारी थाल।
छतिस व्यंजन धरे अगारू हो छिनारके लाल॥
नुकीला है अंखियां ॥ १ ॥ रूठे०॥

रथ स्यदन दौरे फट फट पै, सुर गण चढे बिमान ॥ लख शोभा भारी ॥१॥ गई जनक खबरि सुनी जा जनकराय न, आपगई बारात सजैं जनक अगवानी कारन ले संग बंधु व तात ॥ करी है तैयारी ॥ २ ॥ गई जनक० जो जो सुनै दौरिके आवें, देख पुरके लोग। धन्य भाग है जनकराय के, धन्य मिलौ संयोग॥ कहैं सब नरनारी ॥ ३ ॥ गई जनक० ॥ राम जुहारकरी मिथिलापति जनवासा बतलाय। ठहर बरात गई दशरथ की, कहैं सुन्दर कविराय॥ करी द्वारे तैयारी ॥ २ ॥ गई जनक०

[नं० ६] दरवाजे की गारी।

चलौ द्वारे देंय कराय, सजन द्वारे आये सजनी ॥ झुण्ड २ मिलिके नारिन के दरवाजे गये जाय। अनंद बधाई द्वारे होव छज्जन कामिन छाय ॥ चौक द्विज पूरौ ॥ १ ॥ चलौ० ॥ जितने घरवारे दशरथ के द्वारे पहुँच आय। मौर बँधौ रघुपति के सिर पै,

शोभा बरनी न जाय ॥ कहत छवि नहिं बरनी ॥२॥ चलौं०॥ धन्य भाग हम तुमके आली, प्रभू जो आये द्वार ॥ द्वारो करवायो विदेह नैं गावो मंगलचार ॥ सुन्दर कवि कहैं सजनी ॥ ६ ॥ चलौं० ॥

[नं० ७] परछन की गारी।

सजनी परछन करि लेउं राम ब्याहन आये। कैसो रूप बनौ दूल्हा को, सो सजनी सुनि लेउ। मौर सुहावे राम शीश पै, हीरा जड़े लखि लेउ ॥ अधिक आनन्द छाये ॥ १ ॥ सजनी० ॥ कानन कुण्डल आली झलकैं श्याम रूप सुकुमार ॥ आली राम मनोहर नैना, हिरना की उनहार। धन्य बर सिय पाये ॥ २ ॥ सजनी० ॥ तिलक लिलार सुहावै हरि के, मुख बिच बिजली माय। सुचि सुन्दर सूरति इन प्रभु की दर्शन दीने आय। कहत छवि नहिं आये ॥३॥ सजनी०

हाथी घोड़ा जोतुम चाहो, अपनी मां के काज।
बहिन तुम्हारीके प्रभुकारन, मंगवायो इक बाज
कहैं चातुर सखियां ॥ ३ ॥ रूठे० ॥
धन दौलततुमको मंगवाम, तुम ऊंट देंयबंधाय।
महल भवन जोमेरौ चाहो, सो लेजाउ उठाय॥
करें हँसि हांसि बतियां ॥३॥ रूठे० ॥
रानी आई जनकराय की, दये जवाहर लाल।
हँसिके प्रभुजी जेमनलावो, कहैकबि सुन्दरलाल
करें हरि जग बतियां ॥४॥ रूठे०॥

[नं० १४] राम जेमन की गारी।

अबकरें रामज्यौनारि, सो गारीगाओ प्रेमभरी।
तीन पनेतक तुम्हरे दादा. रहे हीजड़ा राम॥
चौथे पनमें खीर खायके, गर्भित हुयगई वाम।
छिनरिया अति बिगरी ॥१॥ अब० ॥
कौशिल्या, केकई, सुमित्रा, तीनों सखी छिनार।
जे बियान दशरथ नृपआली, तैसी उनकी नार
लषन से हैं झिगरी ॥३॥ अब० ॥

मातातुम्हरी रावण हरिलई,लाये दशरथब्याहि
तीनदिना रावणने राखी,जे कौशिल्या आहि।
केकई अति उजरी ॥३॥ अब० ॥
सुनो शत्रुहन भरत पियारे.तुमगति कहीन जाय
अबनाहिं तुमको गारी दीहै.कहैं सुंदर कविराय।
खूब जेमों रबड़ी ॥४॥ अब० ॥

[नं० १४] गारी।

बिना गर्भभये सुत चारि.सखी नई बात सुनी।
लाये संग बरात घनेरी. सुर नर मुनि ले संग।
हित सम्बन्धी सब ही लाये ना लाये वे [illegible]।
बहिन बूआ जननी ॥ १ ॥ बिन० ॥
कौशिल्या केकई सुमित्रा जुबन भरी जे नारि।
निपट निकाम नृपति उपजाये एकसंग सुतचारि
यही अचरज सजनी ॥ २ ॥ बिन० ॥
मुनिकी कृपा चारिसुत जाये. ऐसी इनकी माय
सो राम लषण तुम उत्तरदीजो जासेशंक जाय
भानु कुल मुकट मनी ॥३॥ बिन० ॥
सुरनारी पुरनारिनमें मिल शोभालख सम्हारि

रम्भाउमा रमाइन्द्रानी सुन्दर कबि बलिहार॥
देख सिया राम धनी ॥४॥ बिन० ॥

[नं० १५] ज्यौनार उठने पर।

बचइयौं लोगो देश उजारो जाय।
दशरथराजा ब्याहनआये कुमर संगले चारि।
चारौ बिटियां घरकी लीनी खाइलई ज्यौनार
लये जे सब घर जाँय ॥१॥ बचइयौ० ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई खाई खूब अघाय।
...क खर्च कराओइनने नगरी लई लुटाय॥
बाँधकर लये कचौरी जाय ॥२॥बचइयौ.
बहुतकधनछकडनभरिलीनों.जेछिनारके लाल
चारौ सुता लिये जेजामें,देश करो कंगाल॥
पकरियौ कहू भागि ना जाय ॥३॥ बचइयौ०
करें मसखरी लक्षमण हमसे.मेरी सौतिके लाल
बार२ जेछेड़ें भारत. कहैकवि 'सुन्दरलाल' ॥
मसखरी सजनी नाहिं सुहाय ॥४॥ बचइयौ०

[नं० १६] गारी]

सब कऊना रही खुलाय जनकपुर. की नारी॥

खोलत राम सियाको कङ्कना करीगांठि दिखाय
तबदे तारी सखियां बोलें धन्य लला रघुराय
दैरौ कौशिल्या महतारी ॥ १ ॥ सब० ॥
जहु कङ्कनाना धनुषशम्भूको नाहिंताडकानारि
जहुकङ्कना नापरशुरामहै नाहि अहिल्यानारि
न भस्मासुर भारी ॥ २ ॥ सब० ॥
नाजहु कङ्कनाहै हिरनाकुश नाहीं बलिनृप[illegible]
नाजहु कङ्कना हिरण्याक्षहै नाहिं शखासुर[illegible]
दयौ पल में मारी ॥ ३ ॥ सब० ॥
नाजहु कङ्कना क्षीर लड़ाई भये मोहिनी राय।
नाजहू कङ्कनाहै सीताको कहें सुन्दर कबिराम
छिनारिया महतारी ॥ ४ ॥ सब० ॥

सब मिलके खुलामेंगूथ जनकपुरकी रमनी।
आवो दुलारे दशरथजी के खोले मडपै गूथ॥
रामलषनऔर भरत शत्रुहन करिऔजोरअकूत
पिलाओ पय केतौ जननी ॥ १ ॥ सब० ॥
जेनाहिं गूथ सियाको कङ्कना नाहीं सुनीकोयज्ञ

नाहीं जहु मारीच निशाचर फेंको तुम नीतज्ञ।
छिनरिया सुत सजनी ॥ २ ॥ सब० ॥
नाहीं लला जलंधरनारी करौ कपट वासाथ।
तुम छलबलिया होनाराण तुम्हरो पतियार ॥
भली नाहिं तुम करनी ॥ ३ ॥ सब० ॥
गूथ छलैना भरत लला पै केकई लेउ बुलाय।
कोमल अङ्ग शत्रुहन कैसे उनको देउ हटाय॥
ल[illegible] को क्रोध घनी ॥ ४ ॥ सब० ॥
मात सुमित्राको बुलवाओ जिनके कटील्ले नैन
राह चलतन घायलकीने सुन्दर कविको बैन॥
अजोध्या अजब बनी ॥ ५ ॥ सब० ॥

[नं० १८] गारी।

महलाया सुथरी हो सुमित्रा अजब बनी ॥
जनकपुरी की सखिया पुनी राम सुख दैंन।
तुमतौ लये लालिकोन जाबौ कहौ मातसे बैन
कही हमसे जननी ॥२॥ महलाय॰० ॥

हमतौ अपनी बेटी ब्याहीं तुम हूं दीयौ ब्याही
हमरे सुत तुम्हारे बहनोई हुय जैहैं रघुराय ॥
तबही मनकी करनी ॥ २ ॥ महलायक ०
हमारी सौत होय कौशिल्या, मेरे पति घर आय
तादिन घीकेदीपक वारौं, मेरे मनकी हुयजाय
केकई अजब बनी ॥ ३ ॥ महलायक ०
बिदा करन लागे मिथिलापति दीनौदान दहेज।
कहैं सुन्दर कवि चले अवधको श्रीदशरथ [illegible]-
ध अयोध्या अजब ध्वनी ॥ ४ ॥ महलाय[illegible]

मुद्रक—पं० पुरुषोत्तमदास मुरलीधर शर्मा, हरीहर इलैक्ट्रिक प्रेस, मथुरा

'सूचीपत्र'

हमारे यहाँ की हाथों हाथ बिकने वाली कुछ चुहचुहाती गजलें व भजनों की पुस्तकें ।

गज़ल गुलदस्ता	)॥	स्त्री भजनमाला	)॥
गुलज़ार	)॥	गड़बड़ घोटाला	)॥
बावफ़ा कातिल	)॥	चौबीस औतारा	)॥
चमकता चाँद	)॥	श्रीकृष्णावतार	=)
भजन सुखसागर	)॥	भजन मीराबाई	=)
श्रीकृष्ण भजनमाला	)॥	ज्ञान माला	=)
सावन लहरी	)॥	गोपीचन्द रंथरी	=)

इसके अलावा हर प्रकार के गाने, भजन, धार्मिक किस्से, कहानी, नाविल, वैद्यक, ज्योतिष आदि की पुस्तकें बहुत सस्ती मिलती हैं । बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगा कर देखें ।

मिलने का पताः—

हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा ।

'हिन्दी पुस्तकालय प्रेस' मथुरा में छपा ।

विघ्न कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

...वजन,

...परमात्मा एवं श्री गुरुदेव भगवान की असीम अनुकम्पा से

चि० अनन्तश्री

...पौत्र : स्व० श्री बृज किशोर तिवारी

... श्रीमती लक्ष्मी एवं श्री सुभाष चन्द्र तिवारी

निवासी : मेढ़ी दुधि, इटावा

संग

आयु० कु० रूपम

...ी : स्व० पं० प्रकाश नारायण अवस्थी

सुपुत्री : श्री अशोक कुमार अवस्थी

निवासी : फर्रुखाबाद

...रिणय बन्धन

...शीषों के अक्षत कुमकुम अर्पित करने वाले अन्तरंग जनों
की उपस्थिति में सम्पन्न होगा।
पावन परिणय की इस मधुरिम बेला में अपने
स्नेहिल आगमन से अनुग्रहीत कर वर-कन्या को
अमृताशीष प्रदान करने की कृपा करें।

...षी : स्वागताकांक्षी:

राजकिशोर बाजपेयी (एडवोकेट)
घनश्याम किशोर बाजपेयी (एडवोकेट)

विनीत :

डा० नरेश चन्द्र तिवारी
सुरेश चन्द्र तिवारी
दिनेश चन्द्र तिवारी